राजस्थान
कला एवं संस्कृति

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए रामबाण पुस्तक

ब्रह्मास्त्र

Apni Padhai Publication

प्रकाशक:-

Apni Padhai Publication

सिद्धमुख मोड, राजगढ (चूरू)

- Apni Padhai

- Apni Padhai

- 7568716768

© प्रकाशकाधीन

मूल्य - ₹ 150 /-

इस पुस्तक के किसी भी भाग को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना छापना या किसी इलेक्ट्रोनिक माध्यम से फोटोकॉपी, PDF, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी विधि से वितरण नहीं किया जा सकता है, इसके सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता जिम्मेदार नहीं होगे। आप उक्त शर्ते मानते हुए ही यह पुस्तक खरीद रहे है

भूमिका

प्रिय विधार्थीयों,

आपकी जिज्ञासा, आपका उत्साह और आपके अटूट विश्वास से राजस्थान की कला एवं संस्कृति पुस्तक का द्वितीय संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है, आप सभी ने पुस्तक के प्रथम संस्करण को इतना प्रेम दिया इसके लिए में आपका सभी का तहेदिल से आभार प्रकट करता हूँ। राजस्थान की कला एवं संस्कृति पूरे विश्व में एक अलग पहचान रखती है यह कला एवं संस्कृति की ब्रह्मास्त्र पुस्तक रंगीन चित्रों के साथ है जिससे आप राजस्थानी कला एवं संस्कृति को नजदीक से देख पाओगे व आपको पुस्तक आसानी से याद भी हो जायेगी।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक एक ऐसे संसाधन के रूप में काम करेगी जो जिज्ञासा जगाती है और सीखने की आपकी इच्छा को बढ़ाती है। यह पुस्तक रंगीन चित्रों के साथ नये जिलों के अनुसार शॉर्ट नोट्स पर आधारित है। इस पुस्तक में वहीं सामग्री समाहित की गई है जो **Examiner** पूछता है।

जैसे ही आप इन पृष्ठों को गहराई से देखेंगे, मुझे आशा है कि आपको न केवल वह ज्ञान मिलेगा जो आप चाहते हैं बल्कि आपको इस प्रयास पर आपके अविश्वसनीय प्रभाव की याद भी मिलेगी। यह पुस्तक स्पष्टता और संक्षिप्तता के प्रति हमारे सामूहिक प्रयास और प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

मुझे आशा है कि राजस्थान कला एवं संस्कृति की यह ब्रह्मास्त्र पुस्तक प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए रामबाण साबित होगी

मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे यह किताब लिखने की शक्ति दी, मैं यह पुस्तक अपने माता–पिता, पत्नी नीलम व बेटी परिधि को समर्पित करता हूँ जिनके हिस्से के समय को चुराकर मेने यह किताब लिखी है, साथ ही अपने सहयोगी **A.K.** सर (रेलवे) व राज का विशेष आभारी हूँ जिनके अथक परिश्रम से पुस्तक का प्रकाशन संभव हो पाया है

रोहित चौधरी

INDEX

- लोक नृत्य .... 1 - 4
- लोक नाट्य .... 5 - 7
- लोकदेवता .... 8 - 12
- लोकदेवी .... 13 - 15
- संत व संप्रदाय .... 16 - 22
- हस्तकला .... 23 - 28
- वेशभूषा .... 29 - 30
- आभूषण .... 31 - 31
- राजस्थान की बावड़ियाँ व छतरियाँ .... 32 - 34
- राजस्थान के महल व हवेलियाँ .... 35 - 38
- लोकगीत .... 39 - 40
- लोक गायन शैलियाँ व संगीत घराने .... 41 - 42
- लोक वाद्ययंत्र .... 43 - 46
- राजस्थान के दुर्ग .... 47 - 54
- राजस्थान के मंदिर .... 55 - 61
- राजस्थान के त्योहार व मेले .... 62 - 68
- राजस्थानी चित्रकला .... 69 - 73
- राजस्थान की जनजातियाँ .... 74 - 76
- सामाजिक प्रथा व रीति रिवाज .... 77 - 80
- राजस्थान की भाषा व बोलियाँ .... 81 - 83
- राजस्थान का साहित्य .... 84 - 89
- साहित्यक संस्थाएँ व प्रमुख संग्रहालय .... 90 - 91

लोकनृत्य

- राजस्थान में दो प्रकार के लोक नृत्य होते हैं

(1) क्षेत्रीय लोक नृत्य (क्षेत्र विशेष के)

(2) जनजाति लोक नृत्य

(1) क्षेत्रीय लोक नृत्य –

❖ घूमर –

- राजस्थान का राज्य नृत्य हैं
- नृत्यों का सिरमौर / लोक नृत्यों की आत्मा कहते है
- केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है
- गणगौर पर्व पर सर्वाधिक किया जाता है।

- नृत्य का शुद्ध रूप राजा महाराजाओं के दरबार में देखने को मिलता है इसलिए इसे रजवाड़ी नृत्य भी कहते हैं
- नृत्य के दौरान 8 अंक का निर्माण होता है जिसे सवाई कहते हैं

- इस लोक नृत्य का विकास भील जनजाति ने किया
- नृत्य में लहंगे की घूम (लहंगे का बार्डर) गोल–गोल घूमने के कारण घूमर नृत्य कहलाया

- नृत्य की विशेषता – हाथों का लचकदार संचालन
- नृत्य में वाद्ययंत्र – ढोलक, नगाड़ा, मंजीरा, शहनाई
- घूमर लोक नृत्य को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए 1986 में 'गणगौर घूमर नृत्य अकादमी' की स्थापना गोवर्धन कुमारी (किशनगढ की राजकुमारी) ने मुंबई में की

- घूमर के तीन प्रकार प्रचलित है

(1) घूमर – महिलाओं द्वारा किया जाता है

(2) लूर – गरासिया जनजाति की महिला करती है

(3) झुमरियों – बालिका द्वारा किया जाता है

❖ कच्छी घोड़ी नृत्य –

- शेखावाटी क्षेत्र में केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है
- व्यवसायिक नृत्य है
- विवाह पर किया जाता है
- नृत्य में झांझ वाद्ययंत्र का प्रयोग किया जाता है
- ढोल, बाँकिया, थाली वाद्ययंत्र का भी प्रयोग किया जाता है
- पुरुष कमर पर नकली काठ की घोड़ी बांधते हैं व आगे–पीछे बढते है जिससे फूल की पंखुडियाँ खिलने व बंद होने का आभास होता है

❖ अग्नि नृत्य –

- उद्गम – कतरियासर (बीकानेर)
- जसनाथी संप्रदाय का नृत्य है
- पुरुषों द्वारा धधकते अंगारों पर नृत्य किया जाता है
- अंगारों के ढेर को धूणा कहते हैं
- नृत्य करते समय फतै – फतै का उच्चारण करते हैं

❖ ढोल नृत्य –

- जालौर का नृत्य है

- ढोली, भील, माली जाति के पुरुषों द्वारा बड़े–बड़े ढोलों के साथ नृत्य किया जाता हैं

- नृत्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जयनारायण व्यास को दिया जाता है

❖ घुड़ला नृत्य –

- जोधपुर में महिलाओं द्वारा चैत्र कृष्ण अष्टमी को किया जाता है
- राव सातलदेव के काल में शुरू हुवा
- छिद्रित मटका होता है जिसमें दीपक जलता है (मटके को घूडला कहते है)
- रूपायन संस्थान (बोरूंदा) के कोमल कोठारी ने नृत्य को संरक्षण दिया

❖ तेरहताली नृत्य –

- कामड जाति की महिलाओं द्वारा रामदेव जी के मेले पर
- उद्भव – पादरला गाँव (पाली)
- व्यवसायिक नृत्य है
- प्रमुख वाद्य यंत्र – चौतारा, मंजीरा, तानपुरा, करताल, चिमटा
- मुख्य कलाकार – मांगी बाई, मोहनी, लक्ष्मणदास कामड़
- 9 मंजीरे दायें पैर में, 2 मंजीरे कोहनियों में, 2 हाथों में, कुल 13 मंजीरे पहनकर महिला बैठ कर नृत्य करती है व पुरुष वाद्य यंत्र बजाते हैं

❖ चरी नृत्य –

- किशनगढ़ (अजमेर) में गुर्जर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य
- सिर पर चरी (टोकणी) रख नृत्य करते हैं
- चरी में जलते हुए कपास के बीज रखे जाते हैं
- मुख्य कलाकार – फल्कू बाई (किशनगढ़),
  – सुनीता रावत
  – श्री मोहनगौड (किशनगढ़)

❖ भवाई नृत्य –

- उदयपुर क्षेत्र का
- प्रवर्तक – बाघाजी / नागोजी (अजमेर)
- भवाई जाति द्वारा किया जाता है
- स्त्री + पुरुष दोनो करते हैं
- व्यवसायिक नृत्य है
- सिर पर 7 या 9 मटके रखकर नृत्य करना, ग्लास, थाली, प्लेट पर नृत्य करना, मुँह से रुमाल उठाना क्रियाएँ करते है
- कलाकार –रूप सिंह शेखावत, अस्मिता काला (जयपुर), श्रेष्णा सोनी, दयाराम, तारा शर्मा, कृष्णा व्यास छंगाणी

❖ गींदड नृत्य –

- शेखावाटी का नृत्य
- होली के त्योंहार पर करते है
- महिलाओं की भूमिका पुरुष निभाते हैं जिन्हें गणगौर / महरी कहा जाता है
- यह नृत्य स्वांग कला के लिए प्रसिद्ध है
- इसमें मुख्यतः साधु ,शिकारी ,सेठ – सेठानी, दूल्हा–दुल्हन, सरदार, पादरी, बाजीगर, राम–कृष्ण के स्वांग करते हैं

❖ चंग नृत्य / ढफ नृत्य –

- शेखावाटी के पुरुष होली पर चंग / ढफ वाद्ययंत्र लेकर नृत्य करते हैं

❖ बम नृत्य –

- भरतपुर + अलवर का नृत्य
- फाल्गुन माह (होली) में नई फसल आने की खुशी में नृत्य किया जाता है
- नगाड़ा (बम) वाद्ययंत्र के साथ रसिया गीत गाते है इसलिए बम रसिया नृत्य भी कहते हैं

❖ नाहर नृत्य –

- मांडल (भीलवाड़ा) का नृत्य
- नृत्य का आरंभ खुर्रम (शाहजहाँ) के समय
- नर्तक अपने शरीर पर रुई लगाकर नाहर (सींगो वाले शेर) का स्वांग करते हैं
- होली के 13 दिन बाद आयोजित होता है

❖ डांडिया नृत्य –

- मारवाड़ क्षेत्र का नृत्य
- होली के बाद पुरुषों की टोली डांडिया लेकर नृत्य करती है
- गीतों में बड़ली गांव (जोधपुर) के भैरुजी का गुणगान किया जाता है

लोकनाट्य

● **ख्याल –**

- ऐतिहासिक लोककथा पर आधारित संगीत प्रधान लोकनाट्य हैं
- ख्याल का सूत्रधार – हलकारा कहलाता हैं
- भाग लेने वाला कलाकार – खिलाड़ी व ख्याल की प्रतियोगिता दंगल कहलाती है

❖ कुचामनी ख्याल –

- प्रवर्तक – लच्छीराम
- प्रमुख खिलाड़ी – उगमराज
- लच्छीराम ने – चाँद नीलगिरी, राव रीडमल, मीरा मंगल ख्यालें लिखी

● **विशेषता –**

- इसका रूप ओपेरा (संगीत) जैसा है
- प्रदर्शन खुले मंच पर होता है
- स्त्री चरित्र का अभिनय पुरुष करते हैं
- ढोल, शहनाई, सांरगी वाद्ययंत्र बजाते है
- नृतक ही गाने को गाते हैं

❖ शेखावाटी / चिड़ावा ख्याल –

- प्रवर्तक – नानूराम (चिडावा निवासी)
- दूलिया राणा (नानूराम के शिष्य) ने लोकप्रिय किया
- प्रमुख ख्याले – हीर राँझा, हरिचन्द, भर्तृहरि, जयदेव कलाली , ढोला मरवण, आल्हादेव

❖ जयपुरी ख्याल –

- प्रमुख कलाकार – गुणीजन खाना के कलाकार
- महिलाओं की भूमिका महिला ही निभाती है
- ख्याल–जोगी–जोगण, कान–गुजरी, मियाँ–बीबी, पठान

> नोट – सवाई जयसिंह ने चित्रकला के लिये सूरतखाना, सवाई प्रताप सिंह ने 22 विद्वान कलाकारों के लिए गुणीजनखाना व सवाई मानसिंह द्वितीय ने जयपुर में पोथीखाना संग्रहालय का निर्माण कराया

❖ हेला ख्याल –

- लालसोट (दौसा), सवाईमाधोपुर की प्रसिद्व
- बम, नौबत वाद्ययंत्र बजाये जाते हैं
- विशेषता – हेला देना (लंबी टेर में आवाज देना)

❖ अली बक्शी ख्याल –

- मुण्डावर (खैरथल–तिजारा) के राजा अली बक्श के समय प्रारंभ हुई
- अली बक्शी को अलवर का रसखान कहते हैं

❖ **ढप्पाली ख्याल** – अलवर, भरतपुर

❖ **भेंट के दंगल** – बांडी, बसेडी क्षेत्र (धौलपुर)

❖ कन्हैया ख्याल –

- करौली, सवाईमाधोपुर, दौसा
- प्रस्तुतकर्ता मेडिया कहलाता है

❖ गवरी (राई) –

- मेवाड क्षेत्र में भील जनजाति के पुरूषों का नाट्य
- राज. का सबसे प्राचीन नाट्य है इसलिए इसे लोकनाट्य का मेरू नाट्य भी कहा जाता है
- नाट्य में छोटी नाटिकाएँ – गोमा मीणा, कालू कीर, कानगूजरी, मिवावड व नाहर है

(सम्पूर्ण जानकारी – गवरी नृत्य में है)

लोकदेवता

● **पंचपीर –**

- राजस्थान के 5 लोकदेवता जिनकी पूजा हिंदू – मुसलमान दोनों करते हैं पंचपीर कहलाते है –

(1) पाबूजी राठौड (2) हडबू जी (3) रामदेव जी
(4) मेहा जी मांगलिया (5) गोगा जी

पाबू हडबू रामदे, मांगलिया मेहा
पांचू पीर पधारजो, गोगाजी जेहा

❖ पाबूजी राठौड़ –

- जन्म – कोलू (फलौदी) में 1239 ई
- पिता – धांधल जी राठौड़ (धांधल जी मारवाड शासक राव आस्थान के पुत्र व राव सीहा के वंशज थे)
- माता – कमलादे
- पत्नी – फूलमदे / सुप्यारदे (अमरकोट के सूरजमल सोढा की पुत्री)
- घोड़ी – केसर कालमी (देवल चारणी की घोड़ी थी)

● **उपनाम –**

- गौ रक्षक देवता
- लक्ष्मण का अवतार
- प्लेग रक्षक देवता
- ऊँटो का देवता

- मारवाड़ में सर्वप्रथम ऊँट लाने का श्रेय पाबूजी को दिया जाता है
- ऊँट पालक जाति राईका (रेबारी) इन्हें अपना आराध्य देव मानती हैं
- गुजरात शासक आना बघेला से विद्रोह करके 7 थोरी भाइयों (चांदा,देवा,खापू,पेमा.....) को पाबूजी ने शरण दी

- पाबूजी का बहनोई जिंदराव खिची (जायल –नागौर) देवल चारणी की गायें चुराकर ले गया
- देचू गाँव (फलौदी) में युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए, यही पाबूजी महाराज की समाधि है
- पाबूजी के सहयोगी – चांदा, डेमा, हरमल रेबारी
- पाबूजी ने विवाह के समय साढे तीन फेरे लिए थे

● **मंदिर –**

- कोलूमण्ड (फलौदी) में जहाँ केसर कालमी घोडी पर पाबूजी की बायी ओर झुकी पाग की प्रतिमा व हाथ में भाला है
- यहाँ चैत्र अमावस्या को मेला लगता है
- अन्य मंदिर – आहड (उदयपुर)

- मेहर जाति के मुसलमान पाबूजी को पीर मानकर पूजते हैं
- पाबूजी के गाथा गीत 'पाबूजी के पवाडे' (वीर गाथा) माठ वाद्य यंत्र के साथ नायक व रेबारी जाति द्वारा गाये जाते हैं
- पाबूजी की फड़ नायक जाति के लोगों द्वारा रावणहत्था वाद्ययंत्र के साथ बांची जाती है

● **प्रमुख रचना –**

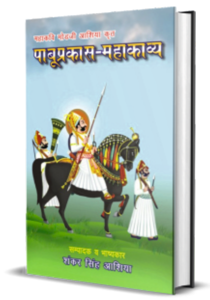

- पाबू प्रकाश – आशिया मोड़जी
- पाबूजी रा छन्द – बीठू मेहा जी
- पाबूजी रा सोरठा – रामनाथ कविया
- पाबूजी रा दोहा – लघराज
- पाबूजी के गीत – बांकीदास
- पाबूजी री बात – लक्ष्मीकुमारी चुंडावत

❖ रामदेव जी तंवर –

- जन्म – उडूकासमेर (शिव – बाड़मेर) में भाद्रपद शुक्ल द्वितीया (बाबे री बीज / दूज) को
- पिता – अजमल जी तंवर
- माता – मैणादे
- पत्नी – नेतलदे (अमरकोट के दलैसिंह सोढा की अपंग पुत्री)
- गुरु – बालीनाथ जी (समाधि – मसूरिया पहाड़ी –जोधपुर)
- घोड़ा – लीला

" घणी घणी ओ खम्मा, अजमल जी रा कंवरा
वो मैणादे रो लाल, नेतलदे रा भरतार"

- रामदेव जी के बड़े भाई बीरमदेव को बलराम का अवतार व रामदेव जी को कृष्ण का अवतार माना जाता है

रामदेव जी (रामदेवरा)

● **उपनाम –**
- रुणेचा रा धणी
- पीरों के पीर
- रामसा पीर (मुसलमान कहते हैं)

- रामदेव जी ने बाल्यकाल में मल्लिनाथ जी से पोकरण प्राप्त कर भैरव राक्षस का वध कर पोकरण पुनः बसाया और पोकरण अपनी भतीजी को दहेज में दिया
- मक्का के पाँच पीरों ने रामदेव जी के चमत्कारों को देखकर पीरों का पीर कहा

- भाद्रपद शुक्ल एकादशी को रामसरोवर झील के किनारे रामदेवरा में 1458 ई (वि. सवंत – 1515 ई) में रामदेव जी ने जीवित समाधि ली
- इनसे एक दिन पूर्व इनकी धर्मबहन डालीबाई मेघवाल ने जीवित समाधि ली

● **कामडिया पंथ –**
- रामदेव जी ने भेदभाव मिटाने के लिए यह पंथ चलाया
- रामदेव जी के मेले पर कामड जाति की महिला तेरहताली नृत्य करती हैं

● **मंदिर –**
- रुणेचा / रामदेवरा (जैसलमेर)
- मंदिर पर 5 रंगो की पंचरंगी ध्वजा नेजा कहलाती है
- रामदेव जी का मंदिर 'देवरा' कहलाता है
- मंदिर में चरण चिह्न स्थापित किये जाते है उसे पगलिये कहते है

- मेला – भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से एकादशी तक
- राजस्थान में सांप्रदायिक सद्भाव का सबसे बड़ा मेला (हिंदू–मुस्लिम बड़ी मात्रा में आते हैं)

- रात्रि जागरण जम्मा कहलाता है
- इनके मेघवाल जाति के भगत 'रिखिया' कहलाते हैं
- चमत्कारों को 'पर्चा' कहते हैं
- भक्तों द्वारा गाए जाने वाले भजन 'ब्यावले' कहलाते हैं
- भक्तों द्वारा कपड़े / मिट्टी के घोड़े समर्पित किए जाते हैं
- रामदेव जी की फड़ का वाचन कामडिया भोपा द्वारा रावण हत्था वाद्ययंत्र के साथ किया जाता है
- रामदेव जी ने परावर्तन अभियान चलाया हिंदू धर्म के शुद्विकरण के लिए
- रामदेव जी एकमात्र ऐसे लोक देवता हैं जो कवि भी हैं इन्होंने 24 वाणियाँ लिखी

● **अन्य मंदिर –**
- उडूकासमेर (बाड़मेर) – जैसलमेर के पिले पत्थरों से बना
- मसूरिया पहाड़ी (जोधपुर)
- सुरताखेड़ा (चित्तौड़गढ़)
- बिराठियां (ब्यावर)
- राजस्थान का छोटा रामदेवरा – खुंडियास (अजमेर)
- छोटा रामदेवरा – गुजरात में है

❖ गोगाजी चौहान –

- जन्म –ददरेवा (चूरु) में 1003 विक्रम संवत् को
- पिता – जेवर सिंह
- माता – बाछल देवी
- गुरु – गोरखनाथ जी
- पत्नी – केलमदे (कोलूमंड की राजकुमारी)

- विवाह से पहले केलमदे को सांप ने डस लिया तो गोगाजी ने क्रोधित होकर सांपों को मारना शुरू कर दिया तब नाग देवता प्रकट हुए, केलमदे का जहर निकाला और गोगा जी को नागों के देवता होने का वरदान दिया

- गोगाजी के मौसेरे भाई अरजन व सुर्जन ने जमीन बंटवारे के विवाद को लेकर सारी गायें महमूद गजनवी को दे दी
- गायों की रक्षा के लिए गोगाजी ने महमूद गजनवी से युद्ध किया व वीरगति को प्राप्त हुए
- महमूद गजनवी ने गोगाजी को जाहर पीर (साक्षात देवता) कहा था
- युद्ध करते हुए गोगाजी का सिर – ददरेवा में पड़ा वो शीशमेडी व धड / शरीर – गोगामेडी (नोहर–हनुमानगढ) में पड़ा वो धुरमेडी कहलाती है

लोकदेवी

❖ करणी माता –

- जन्म – सुआप गाँव (फलौदी)
- पिता – मेहाजी चारण
- माता – देवल बाई
- बचपन का नाम – रिद्धि बाई
- मंदिर – देशनोक (बीकानेर)
- मंदिर का आधुनिक स्वरूप महाराजा गंगासिंह ने दिया
- मंदिर में सोने के दरवाजे अलवर महाराजा ब्ख्तावर सिंह ने लगवाये थे

● उपनाम –

- बीकानेर के राठौड़ वंश की कुल देवी
- चूहों वाली देवी
- चारणों की कुलदेवी

- मंदिर में दो सफेद चूहे हैं जिन्हें काबा कहा जाता है
- मंदिर में सावन भादवा नामक दो बडी कड़ाही है
- करणी माता का मंदिर मढ कहलाता है
- मेला – चैत्र व आश्विन के नवरात्रों पर
- करणी माता का एक रूप सफेद चील भी है
- करणी माता की ईष्ट देवी – तेमड राय माता
- करणी माता की स्तुतियाँ चारण चरजाएँ कहलाती है

❖ जीण माता –

- मूल नाम – जयंती बाई
- जन्म – घांघू गाँव (चूरू)

● मंदिर –

- जीण माता मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के शासनकाल में राजा हट्टड ने 1064 ई में कराया
- काजल शिखर (रेवासा – सीकर) पर मंदिर है इसके पास ही हर्षगिरी पहाडी पर इनके भाई हर्षनाथ का मंदिर है

● उपनाम –

- मधुमक्खियों की देवी
- शेखावाटी की लोक देवी
- सीकर के चौहानों की कुलदेवी

नोट – हर्षद माता मंदिर – आभानेरी (दौसा)

- जीण माता की अष्टभुजी प्रतिमा है
- जीण माता को माँ दुर्गा का स्वरूप व इनके भाई हर्ष को भैरव का अवतार मानते है
- मेला – चैत्र व आश्विन के नवरात्रों पर
- राजस्थानी लोक साहित्य में जीण माता का गीत सबसे लंबा है जो कनफटे जोगी डमरु और सारंगी के साथ गाते हैं जिसे चिंरजा कहते हैं
- ढाई प्याला शराब चढ़ाई जाती है व बकरे की कानों की बलि दी जाती है

❖ कैला देवी –

- करौली के यादव वंश की कुलदेवी
- महालक्ष्मी का अवतार मानते है
- इनकी अराधना में 'लांगूरीया गीत' गाते है
- मूलतः हनुमान जी की माता अंजना का मंदिर है

● मंदिर –

- कालीसिल नदी किनारे, त्रिकूट पहाडी (करौली)
- मंदिर परिसर में हनुमान जी का मंदिर भी है
- चैत्र शुक्ल अष्टमी को लक्खी मेला भरता है
- मंदिर के सामने बोहरा जी की छतरी है
- यहाँ बलि देने की परम्परा नहीं है

❖ शीतला माता –

- वाहन – गधा
- पुजारी – कुम्हार जाति का
- मूर्ति की खण्डित रूप में पूजा होती है

● मंदिर –

- शील की डूँगरी (चाकसू – जयपुर)
- मंदिर निर्माण – सवाई माधोसिंह प्रथम द्वारा

● उपनाम –

- सेढल माता / महामाई
- बच्चों की संरक्षिका देवी
- चेचक की देवी

संत व संप्रदाय

- संप्रदाय मुख्यतः दो प्रकार के होते है

(1) **सगुण संप्रदाय** –

- ईश्वर के साकार रूप (मूर्ति पूजा) की भक्ति करते है
- **प्रमुख सम्प्रदाय** – रामानुज संप्रदाय, निम्बार्क संप्रदाय, वल्लभ संप्रदाय, नाथ संप्रदाय, गौडिय संप्रदाय, मीरा बाई

(2) **निर्गुण संप्रदाय** –

- ईश्वर के निराकार रूप (मूर्ति पूजा नहीं करते है) की भक्ति
- **प्रमुख सम्प्रदाय** –विश्नोई सम्प्रदाय, जसनाथी, दादूपंथी, रामस्नेही, निरंजनी, नवल सम्प्रदाय, लालदासी, कबीरपंथी, संत रैदास, संत पीपा, संत धन्ना जी

- **सगुण व निर्गुण का मिश्रण** – चरणदास जी, संत माव जी

❖ रामानुज संप्रदाय –

- प्रवर्तक – रामानुजाचार्य
- जन्म – श्रीपेराम्बदूर (तमिलनाडू)
- इनकी रचना श्रीभाष्य है
- विशिष्टाद्वैत सिद्वांत का प्रतिपादन किया
- भगवान राम के उपासक है इसलिए रामावत सम्प्रदाय भी कहते है

❖ रामानंदी संप्रदाय –

- संत रामानुज के शिष्य रामानंद भक्ति आंदोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में लेकर आये
- इन्होंने कहा – ईश्वर केवल मनुष्य के सद्गुण पहचानता है उसकी जाति व दुर्गण नहीं पूछता
- हिंदी माध्यम से उपदेश देने वाले प्रथम संत रामानंद जी थे
- राजस्थान में प्रमुख पीठ गलता जी (जयपुर) में है जिसकी स्थापना कृष्णदास पयहारि ने की, पयहारी जी ने यहाँ नाथो का प्रभाव समाप्त कर रामानंदी भक्ति शुरू की

- **गलताजी** –

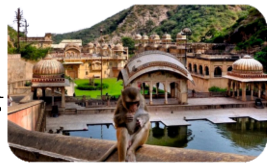

- गालव ऋषि की तपोभूमि है
- यहाँ प्राचीन सूर्य मंदिर बना हुआ है
- गलताजी को उत्तर तोताद्री (उत्तरी पीठ), राजस्थान का बनारस भी कहा जाता है
- गलता जी में बंदर बहुत है इसलिए मंकी वैली भी कहते हैं

❖ रसिक सम्प्रदाय –

- प्रमुख पीठ – रैवासा (सीकर)
- संस्थापक – अग्रदास जी
- राम–सीता की श्रृंगारिक जोडी की पूजा करते है

❖ रामस्नेही संप्रदाय –

- इसमें भगवान राम की निर्गुण उपासना करते है
- इसकी 4 शाखा है

(1) **शाहपुरा (भीलवाडा)** –

- प्रमुख शाखा / पीठ है
- प्रार्थना स्थल – रामद्वारा कहलाता है।

- प्रवर्तक – रामचरण जी है जिनके बचपन का नाम रामकिशन था
- जन्म – सोडा गाँव (डिग्गी – टोंक)
- गुरु –कृपाराम जी (गूदड संप्रदाय के संत)
- इनकी वाणीयों को अणभै वाणी (अनुभव वाणी) कहते है
- शाहपुरा में फूलडोल महोत्सव (चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से पंचमी) मनाया जाता है

(2) **रैण शाखा** – रैण (नागौर)

- संस्थापक – दरियाव जी
- दरियाव जी का जन्म जैतारण (ब्यावर) में हुआ
- इन्होंने रा से राम तथा म से मोहम्मद बताकर सांप्रदायिक सद्भावना का संदेश दिया

(3) **सिंहथल शाखा** – बीकानेर

- प्रवर्तक – हरिरामदास

हस्तकला

- राजस्थान को 'हस्तकलाओ के आगार' के रूप मे जानते है
- हस्तकला/हस्तशिल्प उद्योग – कुटीर उद्योग है

❖ थेवा कला – प्रतापगढ़

- हरे काँच पर सोने का चित्रांकन
- थेवा कला पर 2002 में 5 रूपये का डाक टिकट जारी किया गया
- प्रतापगढ रियासत के राजा सांवतसिंह के समय राज सोनी परिवार ने इस कला से बनी पहली कलाकृति सांवतसिंह को भेंट की
- सोनी परिवार इस कला को गुप्त रखते हैं

● **कलाकार** – नाथू जी सोनी (थेवा कला के जनक), महेश राज सोनी (2015 में पद्मश्री), गिरीश कुमार

❖ मीनाकारी – जयपुर

- सोने के आभूषणों में रंग भराई
- उद्भव – पर्शिया (ईरान)
- जयपुर के राजा मानसिंह प्रथम लाहौर से 5 कारीगर जयपुर लेकर आये

● **कलाकार** – कुदरत सिंह(1988 में पद्मश्री मिला), मुन्नालाल, दुर्गा सिंह

- पीतल पर मीनाकारी – जयपुर, अलवर
- चाँदी पर मीनाकारी – नाथद्वारा
- ताँबे पर मीनाकारी – भीलवाड़ा
- सोने पर मीनाकारी – प्रतापगढ
- मार्बल पर मीनाकारी – जयपुर

पीतल पर मीनाकारी

❖ टेराकोटा – मोलेला गाँव (राजसमंद)

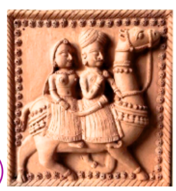

- मिट्टी की मूर्तियां बनाई जाती हैं (चावल की भूसी व गधे की लीद मिलाकर)
- बनास नदी की मिट्टी का प्रयोग जो सिरेमिक जैसी होती हैं

● **कलाकार** – मोहनलाल कुम्हार (2012 में पद्मश्री मिला), खेमराज, राजेंद्र कुम्हार

❖ ब्लू पॉटरी (कामचीनी) –

- चीनी मिट्टी के बर्तनों पर चित्रकारी
- उद्भव – पर्शिया (ईरान)
- भारत में इसका प्रचलन अकबर के समय हुआ
- दिल्ली निवासी भोला नाम के व्यक्ति ने यह कार्य चूडामन व कालूराम को सिखलाया जो कला को जयपुर लाये
- महाराजा रामसिंह द्वितीय के शासनकाल में ब्लू पॉटरी की शुरूआत हुई
- नीला रंग (कोबाल्ट आक्साइड) का प्रयोग होता है
- 1974 में मऊ (सीकर) के कृपाल सिंह शेखावत को ब्लू पॉटरी के लिए पदमश्री से सम्मानित किया गया

● **महिला कलाकार** – स्व. नाथी बाई

● **अन्य कलाकार** – गोपाल सैनी, जमनाप्रसाद, भगवान सहाय, हनुमान सहाय

> नोट – रामगढ (अलवर) के ओमप्रकाश गालव क्ले पाटरी (डिजाइनर मिट्टी के पात्रो) के कलाकार है

❖ **सुनहरी (स्वर्णिम) पेंटिंग पॉटरी** – बीकानेर

❖ कागजी पॉटरी – अलवर

- बहुत पतली परत वाले बर्तन बनते हैं

❖ **ब्लैक पाटरी** – कोटा, सवाईमाधोपुर

❖ गलीचे – जयपुर

- आमेर शासक मानसिंह प्रथम ने राजस्थान में गलीचा बनाने की पहल की

❖ नमदे – टोंक

- मूल कला – ईरान

❖ दरियाँ –

- लवाण (दौसा), टांकला (नागौर), सालावास (जोधपुर) की प्रसिद्व

❖ गोटा –

- महिलाओं के कपड़ों के बाहर की तरफ गोटे लगाये जाते हैं
- चौडा गोटा हो उसे लप्पा व कम चौड़ाई वाले गोटे को लप्पी कहते हैं

- लप्पा–लप्पी, किरण, बांकड़ी, गोखरू, बाँकडी, बिजिया गोटे के प्रकार हैं
- खंडेला (सीकर) गोटे के लिए प्रसिद्ध
- गुलाल गोटा – जयपुर का प्रसिद्व है

❖ बातिक –

- कपड़े पर काच्चा चित्र बनाकर उसके ऊपर मोम का लेप कर देना
- खंडेला (सीकर) का प्रसिद्व

❖ फड़ चित्रण – शाहपुरा (भीलवाडा)

- छिपा जाति के जोशी चितेरो द्वारा पट चित्रण किया जाता है जिसे फड कहते हैं

- पट (कपड़े) पर चित्र बनाकर लोक देवता की कथा प्रस्तुत करना

● **कलाकार** – श्री लाल जोशी (शाहपुरा – भीलवाडा के है, इनको 2006 में पद्मश्री मिला)
पार्वती जोशी (प्रथम महिला चित्रकार), कल्याण जोशी

- सबसे लोकप्रिय / सबसे छोटी फड – पाबूजी की
- सबसे पुरानी / सबसे बड़ी फड़ – देवनारायण जी की

❖ बादला – जोधपुर

- जिंक / जस्ते से निर्मित पानी रखने की बोतल

❖ तारकशी के जेवर – नाथद्वारा (राजसमंद)

- चांदी के पतले तारो के आभूषण

❖ कोफ्तगिरी –

- फौलाद / लोहे की वस्तुओं पर सोने के पतले तारों की जड़ाई
- यह कला दमिश्क से पंजाब लायी गयी
- मुगलों के समय वहाँ से राजस्थान आयी
- जयपुर + अलवर की प्रसिद्व

❖ तहनिशा –

- डिजाइन को गहरा खोदकर उसमें पतले तार भरते हैं
- उदयपुर + अलवर में यह कार्य करते है

❖ तलवार – सिरोही

● **तलवार के नाम–**

- भोगलियाँ (दो गांठ वाली तलवार), ठेरणा, कुलाबो (खमदार पत्ती वाली तलवार), साँकेला (पाते पर जलेबी के समान आँवल), नालदार
- मेवाड़ में बिगोद का लोहा प्रयुक्त किया जाता था

❖ लाख का काम – जयपुर, जोधपुर

- लाख की चूड़ियाँ मौकड़ी कहलाती हैं
- चूड़ियाँ बनाने वाले को लखारा तथा बेचने वाले को मणिया कहते हैं
- काँच की चूड़ी को 'कातरया' कहते हैं
- हाथी दाँत की चूडियाँ – जोधपुर

❖ हाथी दांत के खिलौने, मूर्तियां – जयपुर, उदयपुर

- मारवाड में हाथी दांत के खिलौने को बागुडिया कहते थे

❖ कुन्दन कला – जयपुर

- सोने के आभूषणों में रत्नों की जड़ाई

❖ कावड –

- चलता–फिरता काठ का मंदिर जिसके कई द्वार होते है
- बस्सी (चित्तौड़गढ़) में खेरादी जाति के लोग कावड बनाने का कार्य करते है

● **कलाकार** – माँगीलाल मिस्त्री, द्वारिका प्रसाद जाँगिड़, सत्यनारायण सुथार

❖ बेवाण – बस्सी (चितौडगढ)

- लकडी से बनी छोटी मंदिरनुमा आकृति
- इसे मिनीएचर वुडन टेम्पल भी कहते है
- देवझूलनी / जलझूलनी एकादशी को बेवाण की झांकी निकाली जाती है
- बस्सी की काष्ठकला के जन्मदाता – प्रभात जी सुथार

● **कलाकार** – जमनालाल सुथार, द्वारका प्रसाद

❖ कोठियाँ –

- ग्रामीण क्षेत्रों में अनाज भंडारण के लिए निर्मित

❖ वील –

- ग्रामीण क्षेत्र में दैनिक उपयोग की वस्तु, बर्तन रखने के लिए
- जैसलमेर में ज्यादा प्रचलित
- घोड़े की लीद + चिकनी मिट्टी से बनती है

❖ खेसले – लेटा (जालौर)

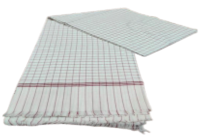

❖ बू–नरावता गाँव – नागौर

- मिट्‌टी के खिलौने, गुलदस्ते बनाने के लिए प्रसिद्व

❖ कठपुतलियां, लकडी के खिलौने – उदयपुर

- लोक कला मंडल / मंदिर (उदयपुर) ने देवीलाल सामर के नेतृत्व में कठपुतलियों को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दी
- लोककला मंदिर की स्थापना 1952 में देवीलाल सामर ने की

❖ तीर कमान – बोडीगामा (डूंगरपुर), चन्दुजी का गढा (बाँसवाड़ा)

❖ रमकड़ा उद्योग – गलियाकोट (डूँगरपुर)

- पत्थर के खिलौने बनाये जाते हैं

❖ मिरर वर्क – चौहटन (बाड़मेर)

- कपड़े पर काँच लगाना
- सर्वाधिक कार्य – जैसलमेर

❖ पेचवर्क – शेखावाटी

- कपड़े पर कपड़े लगाना

❖ ऐप्लीक –

- कपडे पर कपडे के रंगीन टुकडो को एक साथ सिलाई करना
- ओडिसा का पिपली शिल्प ऐप्लीक नाम से जाना जाता है

❖ मोजड़ी जूतियाँ – भीनमाल (जालौर)

- दूल्हे, दूल्हन की जूतियाँ बिनोटा कहलाती है

❖ सूंघनी नसवार – ब्यावर

❖ छाते – फालना (पाली)

नसवार

छाते

वेशभूषा

- राजस्थान में रंग–बिरंगे कपड़े पहनते हैं लेकिन लाल रंग का महत्व ज्यादा है तभी तो कहते हैं
  " मारू थारे देश में उपजे तीन रतन,
  इक ढोला, दूजी मारवण, तीजो कसूमल रंग (लाल रंग)"

❖ पगड़ी / साफा –

- पुरुष सिर पर बाँधते हैं
- लंबाई में बड़ी हो तो पाग व छोटी हो तो पगड़ी कहलाती है
- जरी की बनी पगडी पेचा कहलाती है
- विवाह के अवसर पर मोठडे की पगड़ी, श्रावण माह में लहरिया की पगड़ी, दशहरे पर मदिल की पगड़ी, होली पर फूल पत्ती की पगड़ी, युद्ध में व आखा तीज पर केसरिया पगड़ी, शोक के समय सफेद रंग की पगडी पहनते हैं
- पगड़ी प्रतिष्ठा का सूचक है
- राजस्थान में कहावत है – पगड़ी की लाज रखना
- पगडी का वास्तविक संरक्षक अकबर को मानते है
- विश्व की सबसे बड़ी पगड़ी बागोर हवेली (उदयपुर) में है
- साफा / पगड़ी पर आगे की ओर बाँधा जाने वाला आभूषण सिरपेच कहलाता है

● **मेवाड की पगड़ियाँ –**

- अमरशाही, उदेशाही, अरसीशाही, भीमशाही, स्वरूपशाही, अटपडी पगडी

● **मारवाड की पगड़ियाँ –**

- खिड़कियां पाग, जसवंतशाही, तख्तशाही, विजयशाही, खंजरशाही

● **अन्य पगड़ियाँ –** अमीरशाही, शिवशाही, शाँहजहानी, राजशाही (लाल रंग की लहरिये की – जयपुर), खन्ना (मध्यकाल की एक पगडी)

- सुनार आँटे वाली पगड़ी, बंजारे मोटी पट्टेदार पगड़ी पहनते है व सोने चाँदी के सजायी कलात्मक कार्यो से पगडी फेंटा पगड़ी होती है

फेंटा पगड़ी

- मेवाड़ की पगड़ी व जोधपुर का साफा प्रसिद्ध है
- जोधपुरी साफा महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय के काल में प्रचलित हुआ था

● **छाबदार –** मेवाड़ के महाराणाओं को पगड़ी बांधने वाले को छाबदार कहते थे

नोट – जोधपुरी कोट पेंट को राष्ट्रीय पोशाक का दर्जा प्राप्त है

❖ पुरूषों की वेशभूषा –

● **जामा –**

- विवाह या युद्व के अवसर पर शरीर के उपरी भाग पर पहने जाने वाला वस्त्र

● **पायजामा –** कमर से पैरो तक पहने जाने वाला वस्त्र

● **अंगरखी / बुगतरी / बंडी –**

- अगंरखी को बुगतरी (बखतरी) भी कहा जाता है
- छोटी बाँह की अंगरखी बांडियो कहलाती है
- पुरुष अपने शरीर के ऊपरी भाग पर बिना कॉलर, बिना बटन की कढाई का कुर्ता पहनते है
- मिरजाई, दुतई, गदर, कानो, डगला, तनसुख, गाबा, डोढी अंगरखी के प्रकार हैं
- अंगरखी का विकसित / संशोधित रूप – अचकन

● **चोगा –**

- अंगरखी के ऊपर पहनने वाला वस्त्र
- सवाई माधोसिंह प्रथम का चोगा विश्व का सबसे बड़ा चोगा है जो सिटी पैलेस जयपुर में है

● **आतमसुख –**

- सर्दी से बचाव के लिए अंगरखी के ऊपर पहना जाता है

● **घूघी –**

- ऊन का वस्त्र है जो वर्षा / सर्दी के बचाव हेतु पहना जाता है

आभूषण

❖ सिर / मस्तक के आभूषण –
- शीशफूल, मेंमद, साकली ,टिकी (बिन्दी), टिड्डी भलको, बोरलो (बोर), सिरमांग, रखड़ी (सुहाग का प्रतीक), फीणी, तावित, गोफण

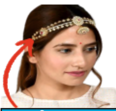
शीशफूल

बोरलो
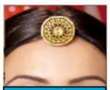
रखड़ी

सिरमांग

❖ कान के आभूषण –
- कर्णफूल, झेला, जमेला, पीपल पत्रा, सुरलिया, झुमका, बाली, लूंग, टोंटी, अंगोट्यां, ओगनिया, कोकरू, कुण्डल, टॉप्स, ओखरी

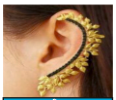
कर्णफूल

झेला

पीपल पत्रा

अन्य आभूषण

❖ नाक के आभूषण –
- नथ, चूनी, चोप, कांटा, बारी, बेसरी, बुलाक, लौंग, भोगली, भंवरकडी, फीणी, लटकन

नथ
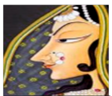
बेसरी

बुलाक
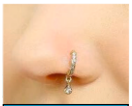
लटकन

❖ दाँत के आभूषण –
- रखन – दाँतों में सोने की प्लेट लगाना
- चूप – दाँतो के बीच सोने की कील जडवाना

❖ गले / कंठ के आभूषण –
- कंठी (काँठला), गलपटियो, हालरा, झालरा, रामनवमी (नांवा), मादलिया, तिमणियाँ, लॉकेट, टेवटा, मटरमाला, मुक्तमाला, चंद्रमाला, कुंदन, सरी, तुलसी, बजट्टी, हांकर, हँसली / खुंगाली, हमेल, कंठहार, चंद्रहार, हंसहार, रानीहार, निबोरी, दुस्सी (नेकलेस से बड़ा), थमण्यो, थेड्यो, आड, मूँठया, पोत, चंपाकली

हमेल

निबोरी

चंपाकली

मादलिया

❖ बाजू / भूजा के आभूषण –
- बाजूबन्द, टड्डा / अणंत, बट्टा, नवरत्न

बाजूबन्द

❖ हाथ की कलाई के आभूषण –
- चूड़ियाँ, मौकड़ी (लाख की चूड़ी), बंगड़ी (चूड़ी), चांट पूंचिया (पोंच), कंगन, गोखरू, हथपान, हथफूल, बल्लया (हाँथी दात / रबर की चुडियाँ), नोगरी, गजरा

हथफूल
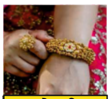
नोगरी

गजरा

बंगड़ी

❖ कमर के आभूषण –
- कन्दोरा (महिलाओं द्वारा कमर पर), करघनी, कणकती, तगड़ी, जंजीर

कन्दोरा

❖ पैर के आभूषण –
- पायजेब, आंवला, घुंघरू, नेवरी (नेवर), नुपूर, कडा, पायल, तेघड़, रमझोल, लंगर (तोडिया), झाँझर,

नेवरी

नुपूर

रमझोल

पायजेब

- **झाँझरिया / पैंजणी –**
  - पाँव में पहनी जाने वाली पतली घुंघरू की साँकली

झाँझरिया

❖ पैर की अंगुली की आभूषण –
- बीछूड़ी / बिछिया (सुहाग का प्रतीक), गोर, पगपान, फोलरी / पोलरा, अनवट, अनोटा

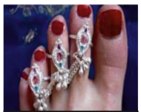
बीछूड़ी / बिछिया

❖ हाथ की अंगुली –
- दामणा, मूंदड़ी (बींटी, अंगुठी), हथपान, छड़ा, अरसी (अंगूठे की अंगूठी)

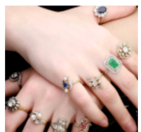
मूंदड़ी (बींटी, अंगुठी)

❖ पुरुषों के कान के आभूषण –
- लोंग (लूंग), मुरकियाँ, बालियाँ, छैलकडी, झाले

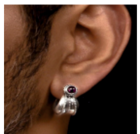
मुरकियाँ

- **कडूल्या** – हाथ व पाँव के कड़े

कड़ूल्या

राजस्थान की बावड़ियाँ व छतरियाँ

- जल संग्रहण के लिए इनका निर्माण किया जाता था
- बूँदी को बावड़ियों का शहर (सीटी ऑफ स्टेप वेल्स) भी कहा जाता है

❖ चाँद बावड़ी – आभानेरी (दौसा)

- गुर्जर प्रतिहार काल में राजा चाँद ने इसका निर्माण कराया
- राजस्थान की सबसे गहरी व सबसे कलात्मक बावड़ी है
- 2017 में 5 रूपये का डाक टिकट जारी हुआ

❖ रानी जी की बावड़ी – बूँदी

- 1699 ईस्वी में बूंदी के शासक राव राजा अनिरुद्ध की रानी नाथावती ने अपने पुत्र बुद्वसिंह के काल में इसका निर्माण कराया था

❖ नौलखा बावड़ी – डूँगरपुर

- डूँगरपुर शासक महारावल आसकरण की पत्नी प्रीमल देवी द्वारा 1586 ई में निर्मित

❖ बाटाडू का कुआँ – बालोतरा

- रेगिस्तान का जल महल
- निर्माण – रावल गुलाब सिंह
- संगमरमर का बना हुआ

❖ हाथी भाटा – ककोंड गाँव (टोंक)

- पत्थर की चट्टान को तराश कर बनाया गयी एक प्राकतिक बावडी है जिसमें हमेशा पानी रहता है

❖ चाँद बावड़ी – जोधपुर

- राव चूण्डा की रानी चाँद कँवर ने बनाई
- इसे चौहान बावड़ी भी कहते हैं

❖ त्रिमुखी बावड़ी – उदयपुर

- महाराणा राजसिंह की पत्नी रामरसदे ने निर्माण कराया

❖ **पन्नालाल शाह का तालाब** – खेतड़ी (झुंझुनूं)

❖ **पन्ना मीणा की बावड़ी** – जयपुर

❖ **सेठानी का जोहड़ा, पीथाणा जोहड़ा** – चूरू

❖ **तापी बावड़ी, तूर जी का झालरा** – जोधपुर

❖ **भंडारेज बावडी** – दौसा

❖ **तालाब ए शाही** – धौलपुर

- जहांगीर के मनसबदार सुलह खां ने शाहजहाँ के लिए शिकार स्थल के रूप में इसका निर्माण कराया

❖ **नौ मंजिला बावड़ी** – नीमराना (कोटपूतली–बहरोड)

- निर्माता – टोडरमल

❖ **हाडी रानी की बावड़ी** – टोडारायसिंह (टोंक)

- टोडा नरेश राव रूपाल की हाडी रानी द्वारा निर्मित

❖ **काकी जी की बावड़ी, भावलदेवी बावड़ी, नागर सागर कुंड** – बूँदी

❖ **झालरा बावड़ी** – सीकर

❖ **झालीबाब बावड़ी** – कुंभलगढ़ (राजसमंद)

❖ **दूध बावड़ी** – माउंट आबू (सिरोही)

❖ **दूध तलाई** – उदयपुर

❖ **हर्षनाथ की बावड़ी** – सीकर

❖ **मेडतणी की बावड़ी** – झुंझुनूं

❖ **वीरूपुरी बावड़ी** – उदयपुर

राजस्थान के महल व हवेलियाँ

❖ एक थम्बा महल / प्रहरी मीनार –

- मंडोर (जोधपुर) में स्थित है
- निर्माण – महाराजा अजीतसिंह ने

❖ एक थम्बिया महल – डूँगरपुर

- महारावल शिवसिंह द्वारा निर्मित गैपसागर झील के किनारे इसके चारो तरफ विजय निवास, खुमान निवास, लक्ष्मण विलास, उदय विलास महल है

❖ जूना महल – डूँगरपुर

- किले की भांति निर्माण हुआ है

❖ अजीत भवन पैलेस – जोधपुर

- देश का प्रथम हैरीटेज होटल
- जोधपुर के महाराजा हनुवंत सिंह के प्रधानमंत्री अजीतसिंह ने निर्माण कराया

❖ उम्मेद भवन / छीतर पैलेस – जोधपुर

- 1929 में महाराजा उम्मेदसिंह ने अकाल राहत कार्यो के तहत निर्माण कराया

- छीतर की पहाड़ी पर स्थित
- भारत का सबसे बड़ा रिहायशी महल
- यहाँ घड़ियों का संग्रहालय है
- वास्तुकार – हेनरी वॉन लैनचेस्टर, स्विंटन जैकब

❖ सिटी पैलेस / राजमहल – उदयपुर

- 1559 में महाराणा उदयसिंह ने पिछोला झील के किनारे निर्माण कराया

- इतिहासकार फर्ग्यूसन ने इन्हें राजस्थान का विंडसर महल कहा
- यहाँ कृष्णा विलास महल, दिलखुश महल, माणक चौक, मयूर चौक स्थित है

❖ अभेड़ा महल – कोटा

- इसका निर्माण महाराव अभयसिंह हाडा द्वारा चम्बल नदी किनारे किया गया
- इसे हाडौती का हवामहल कहते है

❖ अबली मीणी का महल – कोटा

- कोटा के महाराव मुकुन्दसिंह हाडा ने अपनी पासवान अबली मीणी के लिए इस महल का निर्माण कराया
- इसे हाडौती का ताजमहल अथवा राजस्थान का छोटा ताजमहल कहते है

❖ गुलाब महल – कोटा

❖ काठ का रेन बसेरा / काष्ठ प्रसाद – झालावाड़

❖ गढ़ पैलेस भवन – झालावाड़

- 1838 में झाला मदनसिंह द्वारा निर्मित

❖ लालगढ़ महल – बीकानेर

- महाराजा गंगासिंह ने अपने पिता लालसिंह की याद में इसका निर्माण कराया
- लाल पत्थरों से यूरोपियन शैली में बना है
- इसका उद्घाटन लॉर्ड हॉर्डिग्ज ने किया

❖ सिटी पैलेस – जयपुर

- निर्माण – 1729 में सवाई जयसिंह ने
- जयपुर राजपरिवार का निवास स्थान
- इसके अन्दर चन्द्रमहल, मुबारक महल, सिलहखाना (शस्त्रागार), दीवान ए आम, दीवान ए खास स्थित है
- विश्व का सबसे बड़ा चाँदी का पात्र है

● **चन्द्रमहल** – सिटी पैलेस (जयपुर)
- यह भवन 7 मंजिला है
- वास्तुकार – विद्याधर भट्टाचार्य

● **मुबारक महल** – सिटी पैलेस (जयपुर)
- सवाई माधोसिंह द्वितीय ने अतिथियों के ठहरने के लिए स्विंटन जैकब की देखरेख में इसका निर्माण कराया
- राजपूत + मुगल + यूरोपीय शैली में निर्मित है

लोकगीत

❖ लोकगीतों से सबंधित कथन –

- महात्मा गाँधी ने कहा – लोकगीत जनता की भाषा व हमारी संस्कृति के पहरेदार हैं
- रविंद्र नाथ टैगोर ने कहा – लोकगीत संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला है
- देवेंद्र सत्यार्थी ने कहा – लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोले चित्र हैं

❖ केसरिया बालम पधारो म्हारे देश –

- राजस्थान का राज्य गीत
- पत्नी परदेश गये पति को संदेश भेजती है
- बीकानेर की मांड गायिका अल्लाह जिलाई बाई ने पहली बार बीकानेर महाराजा गंगासिंह के दरबार में गाया था

❖ विवाह के गीत –

- सगाई – सगाई के अवसर पर गाया जाता है
- बधावा – शुभ अवसरों पर गाया जाने वाला गीत
- चाकभात – महिला कुम्हार के घर जाकर चाक पूजते समय गीत गाती है

- रातीजगा – रात्रि जागरण के गीत
- मायरा / भात – भात भरते समय गाये जाने वाले गीत
- घोड़ी – वर की निकासी के समय / घुडचढी की रस्म
- बन्ना – बन्नी – वर – वधू के लिए गाया जाता हैं
- हथलेवा –
- तोरण – वर जब वधू के घर पहुँचता है तब घर में प्रवेश से पहले लकडी का तोरण बाँधा जाता है
- पीठी – वर–वधू को उबटन / पीठी लगाते समय गाते है
- कंवर कलेवा – दूल्हे के साले द्वारा खाना खिलाते समय गाया जाने वाला गीत
- कांकण डोरा – वर–वधू के हाथ पैर पर डोरा बांधना
- जुआ जुई – शादी पर जुआ रस्म के समय गाते है
- जला – जब महिलाएँ बारात का डेरा देखने जाती हैं
- कामण – वर को जादू टोना से बचाने के लिए
- सीठणें – विवाह के अवसर पर महिलाओं द्वारा हंसी मजाक में गाये जाने वाले गाली गीत
- पावणा – दामाद के ससुराल में आने पर व भोजन कराते समय गाये जाने वाले गीत

- बिंदोला / बंदोला – विवाह के पूर्व वर को रिश्तेदारों के यहाँ आमंत्रित किया जाता है वहाँ से लौटते समय गाये जाने वाला गीत है
- दुपट्टा – दूल्हे की सालियों द्वारा गाया जाने वाला गीत
- सेंजा – विवाह गीत (अच्छे वर की कामना हेतु)
- फलसड़ा – विवाह के अवसर पर अतिथियों के स्वागत के लिये गाते है
- कोयलडी गीत – मेवात क्षेत्र का गीत है जिसमें पुत्री को सीख / विदा करते समय गाते हैं।

❖ विरह (वियोग) के गीत –

- कुरंजा– कुरंजा पक्षी (साइबेरियन क्रेन) के माध्यम से महिला विदेश गये पति को संदेश भेजना चाहती है
  "कुरजां ए म्हारो भँवर मिला दयो ए"

- सूवटिया– मेवाड़ क्षेत्र में भील स्त्री अपने पति को सुवटिया (तोता) के माध्यम से संदेश भेजती है
- हिचकी – मेवात क्षेत्र में किसी की याद में गाया जाता है
  "म्हारा पियाजी बुलाव म्हाने आवे हिचकी"
- कागा – कौए को देखकर संबोधित करके गाया जाता है
- झोरावा – जैसलमेर क्षेत्र का लोकगीत जो पति के परदेश जाने पर उसके वियोग में गाते है

- ओल्यू – ओल्यू का अर्थ – याद बेटी की विदाई के समय गाया जाने वाला गीत
- चिरमी – चिरमी एक पौधा होता है जिसके लाल रंग के बीज लगते हैं जो मालवा (पूर्वी मैदान) में मिलती है
  – नववधू अपने भाई / पिता की प्रतीक्षा के समय गीत गाती है
- पपैयो गीत – पपैयो पक्षी को संबोधित करके प्रियेसी अपने प्रियतम को उपवन (बाग) मे आकर मिलने के लिए कहती है
- पीपली – शेखावाटी में वर्षा ऋतु के समय का विरह गीत
- सुपनो – रात्रि में स्वप्न का वर्णन करता विरह गीत

❖ क्षेत्र विशेष के गीत –

- बिछुडो – हाडोती क्षेत्र का गीत है महिला को बिच्छू ने काट लिया और वह अपने पति को दूसरा विवाह करने के लिए कहती है

- ढोला मारु – सिरोही क्षेत्र का लोकगीत ढोला मारू की प्रेम कहानी पर आधारित ढाढी (ढोली) जाति के लोगों द्वारा गाया जाता है
- हमसीढो – मेवाड क्षेत्र में भील स्त्री–पुरूष मिलकर गाते है

लोक वाद्ययंत्र

- लोक वाद्ययंत्र 4 प्रकार के होते हैं

(1) तत् वाद्ययंत्र – तार से बने होते हैं

(2) सुषिर वाद्य – मुँह से फूंक मारकर बजाते हैं

(3) ताल / अवनद्ध वाद्ययंत्र – चमड़े से बने होते है

(4) घन वाद्ययंत्र – धातु से बने होते हैं

(1) तत् वाद्ययंत्र –

● प्रमुख तत् वाद्ययंत्र –

अपंग, भपंग, सारंगी, सुंरिदा, सुरमंडल, रबाब / रबाज, दुकाको, चौतारा / तंदूरा, रावणहत्था, गुजरी, कामायचा, जंतर, चिकारा, इकतारा

❖ सारंगी वाद्ययंत्र –

- सांगवान + कैर + रोहिडा की लकड़ी की बनी
- 27 तार होते हैं
- तत् वाद्य यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ वाद्ययंत्र
- गज की सहायता से बजाई जाती है
- जैसलमेर – बाड़मेर में लंगा जाति द्वारा प्रयुक्त
- मारवाड के जोगियों द्वारा गोपीचंद, भर्तृहरि, निहालदे के ख्याल गाते समय इसका प्रयोग किया जाता है
- प्रसिद्ध वादक– सुल्तान खा (सीकर), रामनारायण (उदयपुर), शकूर खान

● सारंगी के प्रकार –

- धनी सारंगी – निहालदे की कथा वाले जोगी बजाते हैं
- गुजरातण सारंगी – जैसलमेर–बाडमेर में लंगा जाति द्वारा प्रयुक्त सारंगी
- सिंधी सारंगी – पश्चिमी राजस्थान में लंगा जाति द्वारा
- जोगिया सारंगी – अलवर + भरतपुर में जोगियों द्वारा
- जड़ की सारंगी / प्यालेदार सारंगी – जैसलमेर में मांगणियारों द्वारा प्रयुक्त

❖ जंतर वाद्ययंत्र –

- वीणा का प्रारम्भिक रूप
- गले में लटकाकर बजायी जाती है
- बगडावत गुर्जर भोपो द्वारा देवनारायण जी की फड का वाचन इसी वाधयंत्र से किया जाता है

❖ रावणहत्था –

- राजस्थान का सबसे लोकप्रिय, सबसे प्राचीन वाद्ययंत्र
- आधे कटे नारियल पर बकरे का चमड़ा चढा कर बनाया जाता है
- 9 तार होते हैं, भोपो का प्रमुख वाद्ययंत्र
- दायें हाथ से गज द्वारा व बायें हाथ की अंगुलियों से बजाते है
- वायलिन का प्रारंभिक रूप है
- पाबूजी, रामदेवजी व डुँगरजी–जवाहर जी की फड़ का वाचन इसी वाद्य यंत्र से किया जाता है

❖ तंदूरा/ तंबूरा / चौतारा –

- कुल 4 तार होते हैं इसलिए चौतारा वाद्ययंत्र भी कहते हैं
- कामडिया पंथ द्वारा तेरहताली नृत्य में काम आता है

❖ इकतारा –

- नारद जी, मीराबाई का वाद्य यंत्र
- एक तार होता है
- खड़ताल के साथ बजाया जाता है

❖ भंपग –

- डमरु के समान
- अलवर में जोगी बजाते हैं
- कलाकार – जहूर खाँ मेवाती (भंपग के जादूगर) – उमर फारुख मेवाती

❖ कामायचा –

- सारंगी के समान
- 17 तारें होती है
- बकरे की आंत के तीन मुख्य तार होते हैं
- इसकी गज में 27 तार होते हैं
- मांगणियार जाति का वाद्ययंत्र है
- प्रसिद्ध वादक – साकार खाँ मांगणियार

❖ गुजरी –

- रावणहत्था से मिलता – जुलता वाद्ययंत्र
- रावणहत्था के आकार में आधा (5 तारों वाला)

❖ भूंगल (भेरी) –

- युद्ध शुरू होने से पहले रणभेरी बजाते थे
- भवाई जाति का प्रमुख वाद्ययंत्र
- मेवाड़ में खेल शुरू होने से पहले दर्शकों को इकट्ठा करने हेतु बजाया जाता है

❖ तारपी / पावरी –

- कथौड़ी जनजाति बजाती है

❖ सतारा –

- तीन वाद्य यंत्रों (अलगोजा + बांसुरी + शहनाई) का मिश्रित रूप

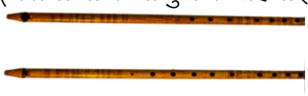

(3) ताल / अवनद्ध वाद्ययंत्र –

● **प्रमुख ताल वाद्ययंत्र** – चंग / ढफ / घेरा, डेरू, डमरू, तबला, ढोलक, डफली, मांदल, मृंदग / पखावज, माठ, खंजरी, नगाडा, निशान, नौबत, बम / टामक / दमामा, ताशा, धौसा

❖ चंग –

- शेखावाटी क्षेत्र का लोकप्रिय वाद्ययंत्र
- होली पर चंग व गीदंड नृत्य में बजाया जाता है

❖ खंजरी – चंग का छोटा रूप

- कामड संप्रदाय के लोगों द्वारा प्रयुक्त

❖ मृदंग (पखवाज) –

- ढोलक के समान है
- बकरे की खाल मढकर बनाते है
- प्रमुख वादक – पंडित पुरुषोत्तम दास (नाथद्वारा –राजसमंद के है, पद्मश्री प्राप्त है)

❖ नगाड़ा –

- मेवात क्षेत्र का वाद्ययंत्र
- रामलीला, नौटंकी, ख्याल नाट्य के दौरान बजाया जाता है
- निर्माण – भैंसे के चमडे का बना
- नगाड़े का जादूगर – राम किशन सोलंकी (पुष्कर)

❖ ढोल / ढोलक –

- अवनद्ध वाद्ययंत्रों में सबसे प्राचीन

❖ डेरू –

- गोगाजी के गुणगान के समय बजाते है

❖ तबला –

- प्रसिद्व वादक – असीर मोहम्मद खाँ
  – चतुर लाल

❖ ताशा –

- मोहर्रम के अवसर पर ताजिये निकालते समय प्रयुक्त

❖ कुंडी –

- सिरोही में गरासिया जनजाति द्वारा प्रयुक्त

❖ नौबत –

- मंदिरों तथा राजाओं के महलों के मुख्य द्वार पर बजाया जाता था

❖ मांदल –

- मिट्टी से निर्मित
- निर्माण – मोलेला (राजसमंद)

❖ बम/ दमामा / टामक –

- नगाड़े का बड़ा रूप
- अवनद्ध वाद्य यंत्रों में सबसे बड़ा
- मेवात क्षेत्र में रसिया गीत के साथ बजाते है

❖ माठ / माटे –

- पाबूजी के पवाडे के गायन के समय

(4) घन वाद्ययंत्र –

● **प्रमुख घन वाधयंत्र** – गरासियो की लेजिम, घुरालियो, रमझौल, खड़ताल, करताल, मंजीरा, भरनी, थाली, झांझ, घुंघरू, घंटा, चिमटा / चिपिंया, हांकल, झालर, टिकोरा, घड़ा, श्रीमंडल

राजस्थान के दुर्ग

- सर्वाधिक दुर्ग – महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान में है
- 21 जून 2013 को राजस्थान के 6 दुर्ग यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किये गए
  (1) गागरोन (2) जैसलमेर (3) रणथम्भौर
  (4) चित्तौडगढ़ (5) कुंभलगढ़ (6) आमेर

यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल में शामिल राजस्थान के स्थान
(1) केवलादेव घना पक्षी अभयारण्य (भरतपुर – 1985)
(2) जंतर मंतर (जयपुर – जूलाई 2010)
(3) कालबेलिया नृत्य – 2010
(4) जयपुर का परकोटा – 6 जुलाई 2019

- सर्वप्रथम दुर्गों का वर्गीकरण मनुस्मृति में मिलता है
- मनुस्मृति में दुर्गों के 6 प्रकार बताये है
- कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' (राजनीति पर आधारित पुस्तक) में दुर्गों के चार प्रकार बताए हैं
  (1) औदक दुर्ग – जलदुर्ग
  (2) पार्वत दुर्ग – पर्वत पर स्थित (सर्वश्रेष्ठ बताया)
  (3) धान्वन दुर्ग – मरुस्थल से घिरा हो
  (4) वन दुर्ग – वनों, झाड़ियों से घिरा हो

- आचार्य शुक्र ने शुक्रनीति में दुर्गों के 9 प्रकार बताये है –

(1) गिरी दुर्ग – किसी पहाड़ी पर स्थित हो
जैसे – चित्तौडगढ़, कुम्भलगढ़, अचलगढ़, तारागढ
राजस्थान के अधिकांश दुर्ग गिरी दुर्ग है

(2) औदक दुर्ग (जलदुर्ग) – जो जल से घिरा हो
जैसे – गागरोन, भैसरोडगढ़ दुर्ग, शेरगढ दुर्ग (बारां)

(3) वन दुर्ग – वनों से घिरा हो
जैसे – सिवाणा दुर्ग, रणथम्भौर दुर्ग

(4) धान्वन दुर्ग – चारों और रेत हो, मरुस्थल हो
जैसे – सोनारगढ़, जूनागढ़, नागौर दुर्ग, भटनेर दुर्ग

(5) एरण दुर्ग – पथरीले मार्ग, कांटेदार झाड़ियों हो
जैसे – चित्तौड़गढ़, जालौर दुर्ग

(6) पारिख दुर्ग – जिसके चारों तरफ खाई हो
जैसे – लोहागढ़ (भरतपुर), जूनागढ़ दुर्ग (बीकानेर)

(7) पारिघ दुर्ग – जिसके चारों और बड़ी – बड़ी दीवारों का परकोटा हो

(8) सैन्य दुर्ग – जिसमें सेना निवास करती हो
– सभी दुर्गों में सर्वश्रेष्ठ है

(9) सहाय दुर्ग – शूरवीरों के लिए सदा अनुकूल रहने वाला

❖ गागरोन दुर्ग – झालावाड

- आहू + कालीसिंध नदियों के संगम पर बिना नींव के कठोर चट्टान पर स्थित राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ जल दुर्ग है
- 11 वीं सदी में डोड परमार राजाओं ने बनाया इसलिए इसे डोडगढ़ / धूलरगढ़ भी कहते हैं
- गागरोन के खींचीं राजवंश का संस्थापक देवनसिंह ने बिजलदेव डोड को हराकर इस दुर्ग पर अधिकार कर लिया और इसका नाम गागरोन रखा
- 1423 में मांडू (मालवा) के शासक होशंगशाह ने अचलदास खींची पर आक्रमण किया तब गागरोन का पहला शाका हुआ
- 1444 में मालवा के शासक महमूद खिलजी प्रथम ने गागरोन शासक पाल्हण सिंह पर आक्रमण किया तब गागरोन का दूसरा साका हुआ व महमूद खिलजी ने दुर्ग का नाम 'मुस्तफाबाद' रख दिया
- बाद में यह दुर्ग अकबर ने पृथ्वीराज राठौड़ को सौंप दिया उन्होंने यहाँ वेलि किशन रुकमणी री ग्रंथ की रचना की

- दुर्ग में मधुसूदन मंदिर, औरंगजेब द्वारा बनाया गया बुलंद दरवाजा, संत हमीदुद्दीन चिश्ती (मीठे शाह की दरगाह), कोटा राज्य के सिक्के डालने की टकसाल, संत पीपा की छतरी व जौहर कुंड स्थित है

❖ चित्तौड़गढ़ दुर्ग –

- उपनाम –
- राजस्थान का गौरव
- किलो का सिरमौर
- मालवा का प्रवेश द्वार
- राज. का दक्षिण पूर्वी प्रवेश द्वार
- अलाउद्दीन खिलजी ने इसका नाम खिज़ाबाद दुर्ग रखा था

❖ अकबर का किला / मैगजीन दुर्ग – अजमेर

- 1570 में अकबर ने गुजरात विजय की याद में इसका निर्माण कराया
- अकबर का दौलतखाना भी कहते है
- समतल भूमि (भूमिज शैली) का दुर्ग
- चतुष्कोणीय आकृति में निर्मित है
- मुस्लिम शैली में निर्मित राजस्थान का एकमात्र दुर्ग है
- हल्दीघाटी युद्ध की अंतिम योजना यहीं बनी थी
- सर टामस रो ने 10 जनवरी 1616 को यहाँ जहाँगीर से व्यापार की अनुमति ली थी
- अंग्रेजों के समय यहाँ शस्त्रागार (मैगजीन) रखा जाता था
- वर्तमान में राजपूताना म्यूजियम (राजकीय संग्रहालय) हैं

❖ लक्ष्मणगढ का किला – सीकर

- बिखरी चट्टानों के टुकडों से बना है

❖ भैसरोडगढ़ का किला – चित्तौड़गढ़

- चंबल और बामनी नदियों के संगम पर बना दुर्ग है जिसका निर्माण भैसाशाह तथा रोड़ा नामक व्यापारियों ने मिलकर किया
- राजस्थान का वैल्लोर कहते हैं
- कर्नल जेम्स टॉड ने कहा कि – यदि उन्हें राजस्थान में एक जागीर (संपत्ति) की पेशकश की जाये तो वे भैसरोडगढ़ को चुनेंगे

❖ चौमू का किला – जयपुर

- निर्माण – ठाकुर कर्ण सिंह
- इसे चौमुँहागढ /रघुनाथगढ़ व धाराधारगढ़ भी कहते हैं

❖ मांडलगढ़ दुर्ग – भीलवाड़ा

- चानणा गुर्जर ने मांडिया भील की याद में इस किले का निर्माण कराया
- हल्दीघाटी युद्ध से पहले मानसिंह यहाँ रुका था

❖ शेरगढ़ किला – बारां

- परवन नदी के किनारे स्थित
- कोशवर्द्धन पर्वत पर है इसलिए इसे कोशवर्द्धन भी कहते हैं
- शेरशाह सूरी ने मालवा अभियान (1542) के समय इसका नाम शेरगढ़ रखा, बाद में मुगल बादशाह फर्रूखशियर ने कोटा महाराव भीमसिंह को यह किला पुरस्कार में दे दिया

❖ शेरगढ़ दुर्ग - धौलपुर

- मालवा के शासक मालदेव ने इसका निर्माण कराया
- चंबल नदी किनारे स्थित है
- यहाँ हुणहुकार तोप स्थित है
- दक्खिन का द्वारगढ कहते हैं
- 1540 में शेरशाह सूरी ने पुनर्निर्माण कर शेरगढ़ नाम रखा

❖ शाहाबाद का किला – बारां

- कालिंजर अभियान (1544) के दौरान शेरशाह सूरी ने अपने पुत्र सलीम शाह के नाम पर इसका नाम सलीमाबाद रखा
- यहाँ नवलबाण तोप है

❖ कोटा का किला –

- चंबल नदी किनारे स्थित है
- निर्माण – माधोसिंह द्वारा
- कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार – आगरा किले के बाद कोटा का परकोटा सबसे बड़ा है

❖ नागौर का किला –

- पृथ्वीराज चौहान के प्रधानमंत्री कैमास ने निर्माण कराया
- अकबर ने शुक्र तालाब का निर्माण कराया

❖ कुचामन का किला – डीडवाना कुचामन

- निर्माण – जालिम सिंह मेड़तिया
- इसे जागीरी किलो का सिरमौर कहते है

❖ चूरू का किला –

- चूरू के ठाकुर कुशलसिंह ने 1739 में इसका निर्माण कराया
- 1814 में बीकानेर शासक सूरतसिंह ने चूरू शासक शिवसिंह पर हमला किया तब चूरू के किले से चाँदी के गोले फेंके गये थे

राजस्थान के मंदिर

- मंदिर निर्माण की मुख्यतः 3 शैलियाँ प्रचलित है

(1) नागर शैली –

- उत्तर भारत के मंदिरों की शैली
- मंदिर का शिखर अमालक और कलश में बँटा होता है
- मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बनाये जाते हैं
- गर्भगृह (मूर्ति वाला स्थान) वर्गाकार होता है

(2) द्रविड़ शैली –

- दक्षिण भारत के मंदिरों की शैली
- मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है
- गर्भगृह आयताकार होता है व गर्भगृह के ऊपर पिरामिड बने होते है
- राजस्थान में द्रविड शैली के मंदिर–रंगनाथ मंदिर (पुष्कर), तिरूपति बालाजी मंदिर (सूजानगढ – चूरू) है

(3) बेसर शैली –

- नागर शैली + द्रविड़ शैली का मिश्रण
- भारत में सर्वाधिक प्रचलित शैली है

❖ मंदिर निर्माण की अन्य शैलियाँ –

● पंचायतन शैली –

- नागर शैली का विकसित रूप है
- एक मुख्य मंदिर (विष्णु को समर्पित) व चार छोटे मंदिर (सूर्य, शिव, गणेश, शक्ति) होते है
- राजस्थान में औसियां के हरिहर मंदिर (पंचायतन शैली का सर्वप्रथम मंदिर), जगदीश मंदिर (उदयपुर), बाडोली शिव मंदिर (चितौडगढ) पंयायतन शैली के मंदिर है

● भूमिज शैली –

- नागर शैली की उपशैली है
- खुली छत वाले मंदिर होते है
- राजस्थान में भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर सेवाड़ी जैन मंदिर (पाली) है, इसके अलावा अन्य मंदिर महानालेश्वर मंदिर (मेनाल – भीलवाड़ा), भण्डदेवरा मंदिर (रामगढ़ – बांरा), उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया–भीलवाडा) भूमिज शैली के है

● कच्छपघात शैली –

- भगवान राम के पुत्र कुश से संबंधित
- शांतिनाथ जैन मंदिर (झालरापाटन) व पद्मनाभ मंदिर इस शैली के उदाहरण है

❖ गुर्जर प्रतिहार / महामारू शैली –

- 8–11 वीं शताब्दी की स्थापत्य कला
- नागर शैली के मंदिर बने

● गुर्जर प्रतिहार शैली के प्रमुख मंदिर –

- सोमेश्वर मंदिर (किराडू), कामेश्वर महादेव मंदिर (आउवा – पाली), दधिमति माता मंदिर (गोठ मांगलोद – नागौर), हर्षद माता मंदिर (आभानेरी–दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), अंबिका माता मंदिर (सलूम्बर), कुंभ श्याम मंदिर (चित्तौड़), राजोरगढ का नीलकंठ महादेव मंदिर (अलवर), आदिवराह मंदिर – आहड (निर्माण–अल्लट) रणछोड़ जी मंदिर – खेड (बालोतरा)

● गुप्तकालीन मंदिर –

- 300 ई से 700 ई के मध्य बने
- राजस्थान में गुप्तकालीन मंदिर चारचोमा शिव मंदिर (कोटा) व भँवर (भ्रमर) माता मंदिर – छोटी सादडी (प्रतापगढ) है

❖ रणकपुर जैन मंदिर – देसूरी (पाली)

- भगवान आदिनाथ की चौमुखी प्रतिमा (चौमुखा जैन मंदिर)
- मुख्य द्वार की छतर पर ऋषभदेव (आदिनाथ) की माता मरूदेवी की मूर्ति है
- मथाई नदी के किनारे स्थित है
- मंदिर में कुल 1444 खंबे है इसलिए खम्भों का अजायबघर कहते है
- मंदिर का निर्माण महाराणा कुम्भा के शासनकाल में 1439 ई में धरणकशाह ने कराया
- वास्तुकार (शिल्पी) – देपाक
- विमल सूरी ने इस मंदिर को नलिनी गुल्म विमान कहा
- महाकवि माघ ने इस मंदिर को त्रिलोक दीपक मंदिर कहा
- फर्ग्यूसन ने कहा – उत्तरी भारत में इसके जैसा कोई मंदिर नहीं है जो इतना सुन्दर, सुसज्जित हो

❖ एकलिंग जी मंदिर – कैलाशपुरी (उदयपुर)

- मेवाड़ महाराणाओं के कुलदेवता
- काले रंग का चतुर्मुखी शिवलिंग है
- 734 ई में बप्पा रावल ने मंदिर का निर्माण कराया, महाराणा मोकल ने पुनः निर्माण कराया व महाराणा रायमल ने मंदिर का वर्तमान स्वरूप दिया था
- पाशुपत / लकुलीश संप्रदाय का मंदिर है

❖ शीतलेश्वर महादेव मंदिर – झालरापाटन (झालावाड़)

- 689 ई में राजा दुर्गण के सामंत वाप्पक ने निर्माण कराया
- तिथियुक्त मंदिरों में राजस्थान का सबसे प्राचीन मंदिर
- चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित

❖ सात सहेलियों का मंदिर – झालरापाटन (झालावाड़)

- अन्य नाम – पद्मनाभ मंदिर / सूर्य मंदिर
- कर्नल जेम्स टॉड ने चारभुजा मंदिर कहा
- यहाँ सूर्य मंदिर सप्तरथ है
- सूर्य प्रतिमा को घुटने तक जूत पहने दिखाया गया है
- मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु की मूर्ति है

❖ किराडू के शिव मंदिर – किराडू (बाड़मेर)

- किराडू का प्राचीन नाम – किरात कूप
- खजुराहो (मध्यप्रदेश) के मंदिरों के समान काम क्रीडाओं के चित्रण होने के कारण इन्हें राजस्थान का खजुराहो कहते है
- यहाँ 5 मंदिर हैं जिनमें सबसे सुंदर सोमश्वर मंदिर है

● **सोमेश्वर मंदिर** –
- किराडू का प्रमुख मंदिर है
- गुर्जर प्रतिहार शैली में निर्मित राजस्थान के अंतिम मंदिर

❖ भण्डदेवरा शिव मंदिर – रामगढ़ पहाड़ी (बारां)

- मंदिर का निर्माण मेदवंशीय राजा मलय वर्मा ने कराया
- इसे राजस्थान का मिनी खजुराहो या हाड़ोती का खजुराहो कहते हैं

❖ अम्बिका माता मंदिर – जगत (सलूम्बर)

- मेवाड़ का खजुराहो कहते है
- निर्माण – अल्लट के समय
- गुर्जर प्रतिहार काल में निर्मित मंदिर

❖ नाकोड़ा भैरव मंदिर – नाकोडा (बालोतरा)

- अन्य नाम – मेवानगर
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी का मंदिर है
- भक्त इन्हें हाथ का हजूर व जागती जोत नाम से जानते है

❖ सास बहू मंदिर / सहस्त्रबाहु मंदिर – नागदा (उदयपुर)

- भगवान विष्णु को समर्पित मंदिर
- गुर्जर प्रतिहार काल में निर्माण हुआ
- दो वैष्णव मंदिर है, बड़ा मंदिर सास का व छोटा मंदिर बहू का मंदिर कहलाता है

❖ दिलवाड़ा जैन मंदिर – आबू पर्वत (सिरोही)

- चालुक्य (सोंलकियो) द्वारा निर्मित
- कुल 5 मंदिरों का समूह हैं
- भारत सरकार ने 14 अक्टूबर 2009 को 5 ₹ का डाक टिकट जारी किया
- दो विशाल मंदिर तथा 3 अनुपूरक मंदिर हैं

(1) विमलवसाही मंदिर –

- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) को समर्पित
- 1031 ई में गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के मंत्री विमलसाह ने निर्माण कराया
- वास्तुकार (शिल्पी) – कीर्तिधर
- कर्नल जेम्स टॉड ने कहा– भारत में ताजमहल के बाद यदि कोई भवन है तो वह विमलशाह का मंदिर है

(2) लूणवसाही मंदिर –

- जैन धर्म के 22 वे तिर्थंकर नेमिनाथ को समर्पित
- मंदिर का निर्माण 1230 ई में चालुक्य राजा धवल के मंत्री वास्तुपाल व तेजपाल ने कराया
- वास्तुकार (शिल्पी) – शोभनदेव

(3) पितलहार / भीमाशाह मंदिर –
- ऋषभदेव / आदिनाथ की 108 मण पीतल की प्रतिमा

राजस्थान के त्योहार व मेले

❖ विक्रम संवत् –

- विक्रमादित्य ने शुरू किया
- 57 ईसा पूर्व से प्रारम्भ हुआ
- चन्द्रमा पर आधारित कैलेण्डर है
- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (एकम) से प्रारम्भ होता है व अंतिम दिन चैत्र अमावस्या होता है
- चैत्र से फाल्गुन तक 12 महिने होते है
- महीनों के नाम – चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन

❖ शक संवत् –

- 78 ई से प्रारम्भ हुआ था
- कुषाण शासक कनिष्क ने प्रारम्भ किया
- सूर्य पर आधारित कैलेण्डर है
- 22 मार्च 1957 को भारत सरकार ने इसे राष्ट्रिय पंचाग के रूप में अपनाया

❖ ईस्वी सन् –

- इसे ग्रिगोरियन कैलेण्डर, अंग्रेजी कैलेण्डर भी कहते है
- 1 जनवरी से 31 दिसम्बर तक कुल 12 महिने होते है
- सूर्य पर आधारित कैलेण्डर है

❖ हिजरी सन् –

- इस्लामिक कैलेण्डर है जो चाँद पर आधारित है
- 622 ई को प्रारम्भ हुआ था
- महिनों के नाम – मोहर्रम, सफर, रबी उल अव्वल, रबी उल सानी, जमाद उल अव्वल, जमाद उल सानी, रज्जब, साबान, रमजान, सव्वाल, जिल्काद, जिलहिज

> राजस्थान में त्योहारों का आगमन छोटी तीज से और समापन गणगौर से माना जाता है तभी कहते है –
> तीज त्योहारा बावड़ी, ले डूबी गणगौर
> राजस्थान में कहावत प्रसिद्व है – सात वार नौ त्योंहार

❖ छोटी तीज / हरियाली तीज –

- श्रावण शुक्ल तृतीया
- त्योहारों का आगमन माना जाता है
- इस दिन जयपुर की प्रसिद्व तीज की सवारी निकाली जाती है

- महिला लहरिया ओढनी का श्रृंगार करके पेडो पर झूला डालकर झूलती है
- तीज से एक दिन पहले विवाहित स्त्री के मायके से कपडे, आभूषण, श्रृंगार का समान भेजा जाता है उसे सिंजारा कहते हैं

❖ राखी / रक्षाबंधन – श्रावण पूर्णिमा

- भाई बहन के प्रेम का त्योहार
- नारियल पूर्णिमा मनाई जाती है
- नारियल की पूजा होती है

❖ बड़ी तीज – भाद्रपद कृष्ण तृतीया

- इसे बूढी तीज, कजली तीज, सातूडी तीज भी कहते हैं
- बूँदी की प्रसिद्व है

❖ हल छठ – भाद्रपद कृष्ण षष्ठी

- श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम का जन्मदिन
- इस दिन हल की पूजा की जाती है

❖ उब छठ – भाद्रपद कृष्ण षष्ठी

- इस दिन बालिकाएँ सूर्यास्त से लेकर चन्द्रोदय तक खडी रहती है

❖ कृष्ण जन्माष्टमी – भाद्रपद कृष्ण अष्टमी

- कृष्ण जी का जन्मदिन
- मेला – नाथद्वारा का प्रसिद्व है

❖ गोगानवमी – भाद्रपद कृष्ण नवमी

❖ बछ बारस – भाद्रपद कृष्ण बारस

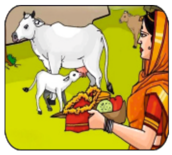

- इस दिन गाय व बछड़े की पूजा होती है

❖ सती अमावस्या – भाद्रपद अमावस्या

- इस दिन राणी सती का मेला लगता है

❖ हरतालिका तीज – भाद्रपद शुक्ल तृतीया

- शिव और पार्वती की पूजा की जाती है

राजस्थानी चित्रकला

- तिब्बत के इतिहासकार तारानाथ ने 7 वी शदी में मरूप्रदेश (मारवाड) में श्रृंगधर नामक चित्रकार का उल्लेख किया
- राजस्थान में सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध चित्रित ग्रंथ 1060 ई में रचित ओध निर्युक्ति वृति व दस वैकालिक सूत्र चूर्णि जैसलमेर भण्डार मे मिले है।
- राजस्थान में 10 वी से 15 वी शताब्दी के मध्य अजन्ता चित्रकला प्रचलित थी, 1500 ई के आस–पास राजस्थानी चित्रकला का आरम्भ माना जाता है।

- 17 वी शताब्दी को राजस्थानी चित्रकला का स्वर्णकाल माना गया है
- राजस्थानी चित्रकला पर प्रारम्भ में जैन, गुजरात, अपभ्रंश शैली का प्रभाव था, बाद में मुगल चित्रकला से प्रभावित हुई

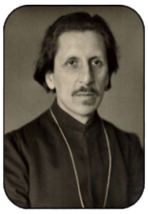

- राजस्थानी चित्रकला का सर्वप्रथम वैज्ञानिक विभाजन 1916 ई में आनन्द कुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक राजपूत पेंटिग्स मे किया

❖ राजस्थानी चित्रकला के उपनाम –

- आनंद कुमार स्वामी, ओ.सी. गांगुली, हैवल ने राजस्थानी चित्रकला को राजपूत चित्रकला कहा
- W.H. ब्राउन ने राजपूत कला कहा
- राय कृष्ण दास ने इसे राजस्थान चित्रकला कहा
- एच.सी. मेहता ने इसे हिन्दू शैली कहा
- विलियम लॉरेन्स के अनुसार – राजस्थानी चित्रशैली विशुद्व रूप से भारतीय है
- डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार – राजस्थानी चित्रशैली स्त्रियों की सुंदरता की खान हैं

❖ चित्रकला के सग्रंहालय –

- जिनभद्रसूरि ग्रंथ भण्डार – जैसलमेर दुर्ग
- मान प्रकाश पुस्तकालय – मेहरानगढ दुर्ग
- सरस्वती भण्डार – उदयपुर
- पोथीखाना संग्रहालय – जयपुर
- अनूप पुस्तकालय – बीकानेर (खजूर के पत्तो पर लिखी पांडुलिपियो का संग्रह मिला है)

❖ राज. में चित्रकला की प्रमुख संस्था –

- जोधपुर – धोराँ, चितेरा
- भीलवाडा – अंकन
- उदयपुर – टखमण–28, तूलिका कलाकार परिषद
- जयपुर – पैग, आयाम, कलावृत, क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप

❖ राजस्थानी चित्रकला का वर्गीकरण –

- राजस्थानी चित्रकला को 4 भागों (स्कूल) में बांटा गया है

(1) मेवाड स्कूल – उदयपुर शैली, नाथद्वारा शैली, चांवड शैली, देवगढ उपशैली, सावर, शाहपुरा (भीलवाडा), बनेडा, बागौर (भीलवाडा), बेंगू (चितौडगढ), केलवा (राजसमंद)

(2) मारवाड स्कूल – जोधपुर शैली, बीकानेर शैली, किशनगढ शैली, अजमेर शैली, नागौर शैली, सिरोही शैली, जैसलमेर, घाणेराव (पाली), रियां (नागौर), भिनाय (अजमेर), जूनियाँ (अजमेर) आदि ठिकानों की कला

(3) हाडौती स्कूल – बूँदी शैली, कोटा शैली, झालावाड

(4) ढूंढाड शैली – आमेर शैली, जयपुर शैली, शेखावाटी शैली, अलवर शैली, उणियारा उपशैली तथा झिलाय, ईसरदा, शाहपुरा, सामोद आदि ठिकाणा कला

(1) मेवाड स्कूल –

❖ उदयपुर शैली –

- राजस्थान चित्रशैली की जन्मभूमि / सबसे प्राचीन
- 1260 ई का श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि चित्रित ग्रंथ इस शैली का प्रथम चित्रित ग्रंथ है जो चित्रकार कमलचन्द्र ने महाराणा तेजसिंह के समय ताड के पत्तो पर चित्रित किया
- 1423 ई में देलवाडा में महाराणा मोकल के समय हीरानंद ने सुपासनाह चरियम ग्रंथ चित्रित किया
- 1540 ई में चौर पंचाशिका चित्र विल्हण द्वारा चित्रित हुआ
- 1540 ई में भागवत पुराण का पारिजात अवतरण चित्र मेवाड के चित्रकार नानाराम ने महाराणा उदयसिंह के समय बनाया
- महाराणा जगतसिंह प्रथम (1628–1652ई) का काल चित्रकला का स्वर्णकाल कहलाता है, इन्होंने चित्रकारो को संरक्षण देकर चित्रकला के लिए विभाग बनाया जिसे चितेरों की ओवरी अथवा तस्वीरां रो कारखानों कहते हैं
- महाराणा जगतसिंह के प्रमुख चित्रकार नसीरूदीन, साहबदीन व मनोहर थे

राजस्थान की जनजातियाँ

- भारत में सर्वाधिक जनजाति – मध्यप्रदेश
- न्यूनतम – पंजाब, हरियाणा
- जनजाति जनसख्याँ में राजस्थान का देश में स्थान – 4
- भारत में सर्वाधिक जनजाति प्रतिशत – मिजोरम
- प्रतिशत के हिसाब से राजस्थान का स्थान – 13 वाँ
- विश्व आदिवासी दिवस – 9 अगस्त को मनाते हैं

❖ राजस्थान में जनजाति –

- सर्वाधिक जनजाति जनसख्याँ – उदयपुर, बाँसवाडा
- सर्वाधिक जनजाति प्रतिशत – बाँसवाडा, डूँगरपुर
- न्यूनतम जनजाति जनसख्याँ – बीकानेर, नागौर
- न्यूनतम जनजाति प्रतिशत – नागौर, बीकानेर

❖ राज. में सर्वाधिक जनजाति –

(1) मीणा (2) भील (3) गरासिया (4) सहरिया

- राजस्थान की जनजातियाँ मुख्य रूप से अरावली क्षेत्र में रहती है

❖ मीणा जनजाति –

- राजस्थान की सबसे बडी जनजाति हैं
- सर्वाधिक – जयपुर, अलवर, दौसा, करौली
- मत्सय पुराण में मीणा जनजाति का उल्लेख हैं
- मीणा शब्द का शाब्दिक अर्थ – मत्सय (मछली)
- उत्पति – भगवान विष्णु के प्रथम अवतार मत्स्यावतार से
- कर्नल जेम्स टॉड इनकी उत्पति काली खोह पर्वतमाला (अजमेर से आगरा तक) से मानता है
- मीणा पुराण में मुनी मगन सागर ने मीणा जनजाति की 5200 गौत्र व 24 खाप बताई है

● मुख्यत: मीणा दो प्रकार के होते है –

(1) **चौकीदार मीणा–** दुर्ग महलो की रक्षा करते

(2) **जमीदार मीणा–** खेती, पशुपालन करते

- पडीहार मीणा – टोंक, भीलवाडा, बूंदी
- मीणा व कंजर जाति का मुखिया – पटेल कहलाता हैं
- मीणा जनजाति की सबसे बडी पंचायत – चौरासी पंचायत
- मीणा सबसे ज्यादा शिक्षित जनजाति है
- मोरनी मांडना मीणा जनजाति में विवाह की एक रस्म है
- मीणा जनजाति के अराध्य देव – भूरिया बाबा / गौतमेश्वर

❖ भील जनजाति –

- राज. की दूसरी बडी व सबसे प्राचीन जनजाति हैं
- सर्वाधिक– उदयपुर, बाँसवाडा, डूँगरपुर
- कर्नल जेम्स टोड ने भीलो को वन पुत्र कहा
- भील शब्द बील से बना है जिसका अर्थ – तीर कमान
- विलियम रोने ने अपनी पुस्तक Wild Tribes of India में भीलो का उत्पति स्थल मारवाड बताया

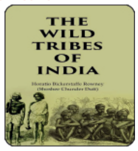

● **चिमाता –** भीलों द्वारा पहाडी जंगल को काटकर या जलाकर की जाने वाली स्थानान्तरित कृषि

● **दजिया –** भीलों द्वारा मैदानी भाग में की जाने वाली कृषि

● **उदरिया पंथ –** जयसमंद झील के आस पास रहने वाले भीलो में प्रचलित पंथ

- भील जनजाति का रणघोष – 'फाइरे–फाइरे'
- केसरियानाथ जी (ऋषभदेव जी) की केसर का पानी पीकर भील झूठ नही बोलते

● **भीलों की शब्दावली –**

- घर को टापरा / कू कहते हैं
- छोटे गाँव का समूह – फला
- बडा गाँव (भीलों की बस्ती) – पाल
- पाल का मुखिया – पालवी कहलाता हैं
- भीलों के गाँवों के समूह का मुखिया – गमेती
- कमरे के बाहर स्थित बरामदे (गैलरी) को डहलिया कहते हैं
- भीलों का कुल देवता – टोटम व मुख्य भोजन – मक्का हैं
- पंसदीदा वृक्ष – महुआ (भीलो का कल्पवृक्ष) हैं जिससे देशी शराब (भीलो का सोमरस) बनती है

- विवाह के समय दूल्हे द्वारा ससुराल में दीवार पर भराडी लोकदेवी का चित्र बनाया जाता है

- भीलो का मृत्यूभोज – कायटा (काट्टा)
- सैनिक के घोडों को मारने वाला पाखरिया कहलाता है
- भील जनजाति में पेड–पौधे को साक्षी मानकर किया गया विवाह 'हाथीवैडो विवाह' कहलाता है

सामाजिक प्रथा व रीति रिवाज

- हिन्दू धर्म में 16 संस्कारो का उल्लेख है –

(1) गर्भाधान –

- बच्चे के गर्भ में आने पर किया जाता हैं

(2) पुसंवन –

- गर्भाधान के दूसरे–तीसरे महिने में करते है

(3) सीमन्तोनयन –

- गर्भवती महिला को अमंगलकारी शक्तियो से बचाने के लिए किया जाता है

> गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन संस्कार शिशु जन्म से पूर्व किये जाते है

(4) जातकर्म –

- बच्चे के जन्म लेते ही घर के किसी पुरूष या महिला द्वारा पेय पदार्थ (घूंटी) पिलायी जाती है

(5) नामकरण –

- जन्म के 11 वे दिन संस्कार होता है

(6) निष्क्रमण –

- निष्क्रमण का अर्थ – बाहर निकालना
- शिशु को सूर्य तथा चन्द्रमा की ज्योति दिखाते है

(7) अन्नप्राशन –

- जन्म के सातवे महीने में शिशु को अन्न ग्रहण कराना शुभ माना है।

(8) चूडाकर्म / जडूला / मुण्डन –

- शिशु के 2–3 साल में सिर के बाल पहली बार मुडवाने का संस्कार

(9) विधारंभ संस्कार –

- शिशु बोलना शुरू करता है तब बालक को शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर से परिचित कराना है।

(10) कर्णवेध – कान बीधें जाते हैं

(11) यज्ञोपवीत / उपनयन –

- 8 वर्ष की उम्र में बच्चो को जनेऊ (सूत के तीन धागो की होती थी) डालने की प्रथा है

(12) वेदारंभ –

- बालक को वेदो का अध्ययन करने के लिए गुरूकुल में भेजा जाता था

(13) केशांत –

- यौवन अवस्था मे पहली बार मूँछ व दाढी के बाल काटे जाते हैं

(14) समावर्तन – बालक गुरूकुल से घर लौटता है

(15) विवाह / पाणिग्रहण –

- 25 वर्ष तक बह्मचार्य का पालन करने के बाद युवक ग्रहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है

(16) अन्त्येष्टि –

- अंतिम / अग्नि परिग्रह संस्कार भी कहते है
- मृत्यु के बाद शरीर अग्नि को समर्पित करते है

❖ सामाजिक प्रथा –

❖ सती प्रथा –

- भारत में सती प्रथा पर राजाराम मोहनराय के प्रयासों से लॉर्ड विलियम बैंटिक ने 1829 में कानून बनाकर रोक लगाई
- ब्रिटिश प्रभाव से राज. में सर्वप्रथम सती प्रथा को बूंदी नरेश विष्णुसिंह ने 1822 में गैरकानूनी घोषित किया, 1825 में बीकानेर, 1830 में अलवर महराजा बन्नेसिंह ने, 1844 में जयपुर नरेश रामसिंह द्वितीय, 1846 में डूँगरपुर, बाँसवाडा, प्रतापगढ, 1848 में जोधपुर महाराजा तख्तसिंह ने गैरकानूनी घोषित कर दण्डनीय अपराध बनाया।

कर मृत व्यक्ति के घर जाते है, परिवार के लोगो को सान्त्वना देते है।

❖ **सांतरवाडा –**
- मृतक के घर पर मृत्यू से 12 दिन तक शोकाकुल में लोगो का आना जाना व सांत्वना देना

❖ **फूल एकत्र करना / फूल चुनना –**
- दाह संस्कार के तीसरे दिन मृतक के सबंधी श्मशान जाकर उसके दाँत/हड्डियाँ एकत्र कर कुल्लड में लाते है

❖ **भदर –**
- अंत्येष्टि संस्कार जिसमें मृतक के परिवार वाले सिर के बाल कटवाते है

❖ **मोकाण –**
- मृतक के रिश्तेदार परिजनों को सांत्वना देने आते हैं

❖ **मौसर / नुक्ता (मृत्युभोज) –**
- मृत्यू के 12 वें दिन भोजन कराते है जिसे नुक्ता/मौसर कहते है
- कुछ व्यक्ति जीवितावस्था में मौसर करते है, उसे औसर / जौसर कहते है

❖ **पगडी का दस्तूर –**
- मौसर के दिन मृत व्यक्ति के बडे पुत्र को उतराधिकारी के रूप में पगडी बांधते है

❖ अन्य रीति-रिवाज –

❖ **नांगल –**
- नवनिर्मित गृह के उद्‌घाटन की रस्म

❖ **जामणा –** पुत्र जन्म पर उसके ननिहाल पक्ष द्वारा वस्त्र, आभूषण भेंट करना जामणा कहलाता हैं।

❖ **जलवा / कुआँ पूजन –**
- बालक के जन्म के कुछ दिन बाद पूजा के लिए गाँव के कुँए पर शोभायात्रा निकालते है

❖ **ओजकौ –** रात्रि भर जागरण

❖ **ढूँढ –**
- बच्चे के जन्म के बाद प्रथम होली पर ननिहाल पक्ष की ओर से उपहार भेजे जाते है

❖ **कीणा –** सब्जी व अन्य समान खरीदने के बदले दिया जाने वाला अनाज कीणा कहलाता है

❖ **आखा –** मांगलिक अवसर पर काम आने वाले चावल/गेंहू के दाने आखा कहलाते है

❖ **तिलक पछेवडो –** भेंट स्वरूप दिया जाने वाला वस्त्र

❖ **धावडिया –** जो व्यक्ति कारवा/काफिले को लूटते थे

❖ **बातपोस –** लोककथा कहने वाले को बातपोस कहते है

राजस्थान की भाषा व बोलियाँ

- राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत के गुर्जरी अपभ्रंश से 12 वी शताब्दी में हुई
- मोतीलाल मेनारिया, डॉ. माहेश्वरी व K.M. मुंशी के अनुसार भी उत्पत्ति गुर्जरी अपभ्रंश से हुई है
- L.P. टेस्सीटोरी के अनुसार गुर्जर अपभ्रंश से राजस्थानी भाषा का विकास हुआ है व राजस्थानी भाषा 12 वीं सदी के लगभग अस्तित्व में आ चुकी थी
- राजपूताने की प्राचीन लिपि – ब्राह्यी लिपि
- जार्ज ग्रियर्सन व पुरूषोत्तम लाल मेनारिया के अनुसार राजस्थानी भाषा का उद्‌गम नागर अपभ्रंश से हुआ है

हिन्दी दिवस – 14 सितम्बर
राजस्थानी भाषा दिवस – 21 फरवरी

- हिंदी बोलने में उत्तरप्रदेश पहले स्थान पर व राजस्थान देश में दूसरे नंबर पर है
- राजस्थानी भाषा का स्वतंत्र काल – 16 वी सदी
- राजस्थानी भाषा का स्वर्ण काल – 1650 –1850 ई
- 778 ई में उद्योतन सूरी द्वारा रचित कुवलयमाला ग्रंथ में 18 देशी भाषाओं में मरूभाषा को शामिल किया गया है जो पश्चिमी राजस्थान की भाषा हैं
- आईन ए अकबरी (रचयिता – अबुल फजल) व कवि कुशललाभ की रचना पिंगल शिरोमणि में भी मारवाडी भाषा का उल्लेख किया गया हैं

❖ राजस्थानी भाषा की डिंगल व पिंगल शैली –

● **डिंगल –**

- पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी बोली) का साहित्य रूप हैं
- चारण साहित्य में प्रयुक्त विशुद्ध राजस्थानी
- गितों के रूप में मिलती हैं, गुर्जरी अपभ्रंश से निर्मित
- प्रमुख ग्रंथ – अचलदास खींची री वचनिका (रचयिता – शिवदास गाडण), राजरूपक (वीरभान), राव जैतसी रो छंद (बीठू सूजा), ढोला मारू रा दूहा (कवि कलोल), सगत रासो (गिरधर आसिया), वेलि कृष्ण रुक्मणी री (पृथ्वीराज राठौड़)

डिंगल साहित्य में 'वयन (वैण) सगाई' अंलकार है, इसमें दोहा छंद का प्रारंभिक व अंतिम शब्द एक ही वर्ण से प्रारंभ होता है

● **पिंगल –**

- पूर्वी राजस्थानी व ब्रजभाषा का साहित्यिक रूप
- भाटो द्वारा प्रयुक्त ब्रज मिश्रित राजस्थानी
- छंद व पदों के रूप में मिलती हैं, शौरसेनी अपभ्रंश से निर्मित
- प्रमुख ग्रंथ – पृथ्वीराज रासो, विजयपाल रासो (नल्ल सिंह), खुमाण रासो (दलपत विजय), वंश भास्कर

❖ जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन

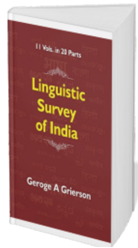

- राजस्थान की भाषा के लिए सर्वप्रथम 1912ई में अपनी पुस्तक लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में राजस्थानी शब्द का प्रयोग किया
- इन्होंने राजस्थानी बोलियों को 5 भागों में बांटा

(1) **पश्चिमी राजस्थानी –** मारवाड़ी, मेवाड़ी, बागड़ी, ढटकी, बीकानेरी, शेखावाटी, देवडावाटी

(2) **उत्तर पूर्वी राजस्थानी –** मेवाती, अहीरवाटी

(3) **मध्य पूर्वी राजस्थानी –** ढूँढाड़ी, तोरावाटी, हाडौती

(4) **दक्षिण पूर्वी राजस्थानी –** रांगडी व सौंधवाडी

(5) **दक्षिणी राजस्थानी –** निमाडी

- इटली के विद्वान L.P. टेस्सीटोरी के अनुसार मुख्य रूप से राजस्थानी बोलियों को दो भागों में बांटा जा सकता है

(1) **पश्चिमी राजस्थानी –** मारवाडी, शेखावाटी, ढटकी

(2) **पूर्वी राजस्थानी –** ढूँढाडी, हाडौती बोलियाँ

1961 तक राजस्थान की 73 बोलियाँ जीवित अवस्था में थी
जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थानी की 71 बोलियाँ हैं
राजस्थानी भाषा की लिपि महाजनी / मुडिया है
मुडिया अक्षर के आविष्कारकर्ता टोडरमल हैं

❖ राजस्थानी की प्रमुख बोलियाँ –

❖ मारवाडी –

- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान की सबसे बडी बोली व सर्वाधिक लोगो द्वारा बोली जाने वाली बोली है
- राजस्थान की प्राचीन भाषा व राजस्थान की मानक बोली है
- जोधपुर के आस पास वाले जिलो में बोली जाती हैं
- मारवाडी का साहित्यिक रूप – डिंगल

राजस्थान का साहित्य

● राजस्थानी साहित्य का कालक्रम –

(1) प्राचीन काल –
- 1050 से 1450 ई का यह समय वीर गाथा का काल था
- श्रीधर व्यास की रणमल्ल छंद इस समय की प्रमुख रचना हैं

(2) पूर्व मध्य काल –
- 1450 से 1650 ई का यह समय भक्तिकाल था

(3) उत्तर मध्य काल –
- 1650 से 1850 ई का समय श्रृंगार, रीति, नीति का काल था

(4) आधुनिक काल –
- 1850 से वर्तमान समय का काल
- बांकीदास और सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस समय युवाओं को जाग्रत करने का काम किया

❖ राजस्थानी साहित्य की शैलियाँ –

❖ ख्यात –
- संस्कृत के ख्याति शब्द से बना है
- राजाओं के सम्मान, सफलता, विशेष कार्यों का वर्णन हैं
- ये अकबर के समय (16 वी शताब्दी के अन्त में) प्रारम्भ हुई

(1) मुहणौत नैंणसी री ख्यात – मुहणौत नैंणसी

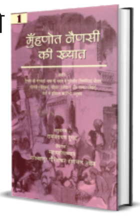

- राजस्थान की सबसे प्राचीन ख्यात हैं
  जो राजस्थानी भाषा में लिखी गई

(2) बाकीदास री ख्यात – बांकीदास
- बांकीदास जोधपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे
- इसमें जयपुर, जोधपुर की स्थापना तिथि बताई गई है

(3) दयालदास री ख्यात / बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात –

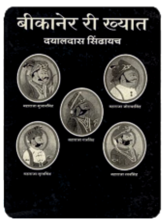

- दयालदास सिढावच ने लिखी जो बीकानेर महाराजा रतनसिंह के दरबारी कवि थें
- यह राजस्थान की अंतिम ख्यात थी
- ख्यात देश दर्पण, आर्याख्यान कल्पद्रुम – दयालदास की रचना हैं

(4) मुण्डियार री ख्यात – मारवाड़ के शासको का वर्णन

❖ वचनिका –
- संस्कृत के वचन शब्द से बना है
- गद्य + पद्य (चंपू) रचना होती हैं

(1) अचलदास खींची री वचनिका – शिवदास गाडण

- गागरोन शासक अचलदास खींची का वर्णन

(2) राठौड़ महेश दासोत री वचनिका – जग्गा खिडिया

❖ वात –

- वात का अर्थ – बात या कहानी
- वीरमदेव सोनगरा री वात – पद्मनाभ
- ढोला मारू री वात – खुशाल चंद्र
- गोरा बादल री वात – जाटमल
- लक्ष्मी कुमारी चुंडावत कहती है – फोज में नगाड़ा, बात में हुकाँरा जरुरी होवे

❖ परची –
- संत – महात्माओं का जीवन परिचय
  जिस रचना में मिलता है उसे परची कहा गया
- जैसे – कबीर री परची, रैदास री परची, मीराबाई री परची

❖ प्रकास –
- विशेष उपलब्धियों / घटना पर प्रकाश डाला गया हो
- राज प्रकाश – किशोर दास
- सूरज प्रकाश – करणी दान

❖ मरस्या –
- किसी व्यक्ति विशेष की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए मरस्या काव्यों की रचना की गई
- राणे जगपत रा मरस्या – मेवाड़ महाराणा जगतसिंह की मृत्यु पर शोक प्रकट
- कल्ला रायमलोत ने पृथ्वीराज राठौड़ से अपने मरसिये जीते जी लिखवाए थे

❖ रासो –

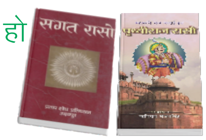

- राजा की महानता, वीरता, युद्ध का वर्णन हो
- पृथ्वीराज रासो – चंदबरदाई ने लिखा
- बीसलदेव रासो – नरपति नाल्ह
- सगत रासो – गिरधर आसिया ने लिखा जो महाराणा राजसिंह के दरबारी कवि थे इसमें महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह की जानकारी मिलती हैं।

साहित्यिक संस्थाएँ व प्रमुख संग्रहालय

❖ प्रमुख संगीत संस्थान –

- **भारतीय लोक कला मण्डल / मंदिर –** उदयपुर
  - स्थापना – 22 फरवरी 1952 को देवीलाल सामर द्वारा
  - कठपूतली नृत्य के प्रचार का कार्य करती है

- **पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र –** उदयपुर
  - भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के संस्कृति विभाग ने देशभर में कुल 7 केन्द्रों की स्थापना की है जिसमें एक उदयपुर में भी हैं
  - इसकी स्थापना बागोर की हवेली में 1986 में की गई थी

- **जवाहर कला केन्द्र –** जयपुर
  - स्थापना – 8 अप्रेल 1993
  - वास्तुकार – चार्ल्स कोरिया
  - सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित होती हैं

- **राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एड क्राफ्टस –** जयपुर
  - कलाओं को बढावा देने के लिए जयपुर महाराजा रामसिंह द्वितीय ने 1857 में इसकी स्थापना मदरसा ए हुनरी के नाम से की थी

- **रूपायन संस्थान –** बोरून्दा (जोधपुर)
  - स्थापना – कोमल कोठारी ने 1960 में की
  - सह संस्थापक – विजयदान देथा
  - उद्देश्य– राजस्थानी कला को बढावा देना
  - यहाँ से लोक संस्कृति व मरूचक्र पत्रिका निकलती है

- **रामप्रकाश थिएटर –** जयपुर
  - सवाई रामसिंह द्वितीय ने 1878 में स्थापना की
- **रवीन्द्र मंच –** जयपुर (1963)
- **राजस्थान संगीत संस्थान –** जयपुर (1950)
- **जयपुर कत्थक केन्द्र –** जयपुर (1978)
- **ललित कला अकादमी –** जयपुर (1957)
- **राजस्थान संगीत नाटक अकादमी –** जोधपुर (1957)

❖ राजस्थान की साहित्यिक संस्थाएँ –

- **राजस्थान साहित्य अकादमी–** उदयपुर
  - स्थापना – 28 जनवरी 1958
  - इस संस्था का सर्वोच्च पुरस्कार – मीरा पुरस्कार
  - यहाँ से मधुमति नाम से मासिक पत्रिका निकलती है

- **राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी–** जयपुर
  - स्थापना – 15 जुलाई 1969
- **राजस्थान संस्कृत अकादमी –** जयपुर (1980)
  - सर्वोच्च पुरस्कार – माघ पुरस्कार
- **राजस्थान ऊर्दू अकादमी –** जयपुर (1979)
  - नखलिस्तान नामक त्रैमासिक पत्रिका निकलती है
- **राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी –** जयपुर
  - 19 जनवरी 1986 को स्थापना की गई
  - ब्रज शतदल नामक त्रैमासिक पत्रिका निकालती है
- **राजस्थान सिंधी अकादमी –** जयपुर (1979)
- **अबुल कलाम अरबी फारसी शोध संस्थान –** टोंक (1978)
- **राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान –** जोधपुर
- **राजस्थान प्रचारिणी सभा –** जयपुर
  - मरूवाणी नामक पत्रिका निकालती है
- **राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी–**
  - स्थापना – 25 जनवरी 1983 को बीकानेर में
  - संस्था का सर्वोच्च पुरस्कार – सूर्यमल्ल मिश्रण शिखर
  - यहाँ से जागती जोत नामक मासिक पत्रिका निकलती है

प्रमुख संग्रहालय

- **हल्दीघाटी संग्रहालय –** हल्दीघाटी (राजसमंद)
  - महाराणा प्रताप के जीवन की घटनाओं के संरक्षित करने के लिए मोहनलाल श्रीमाली ने इसकी स्थापना की
  - यह संग्रहालय गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज है

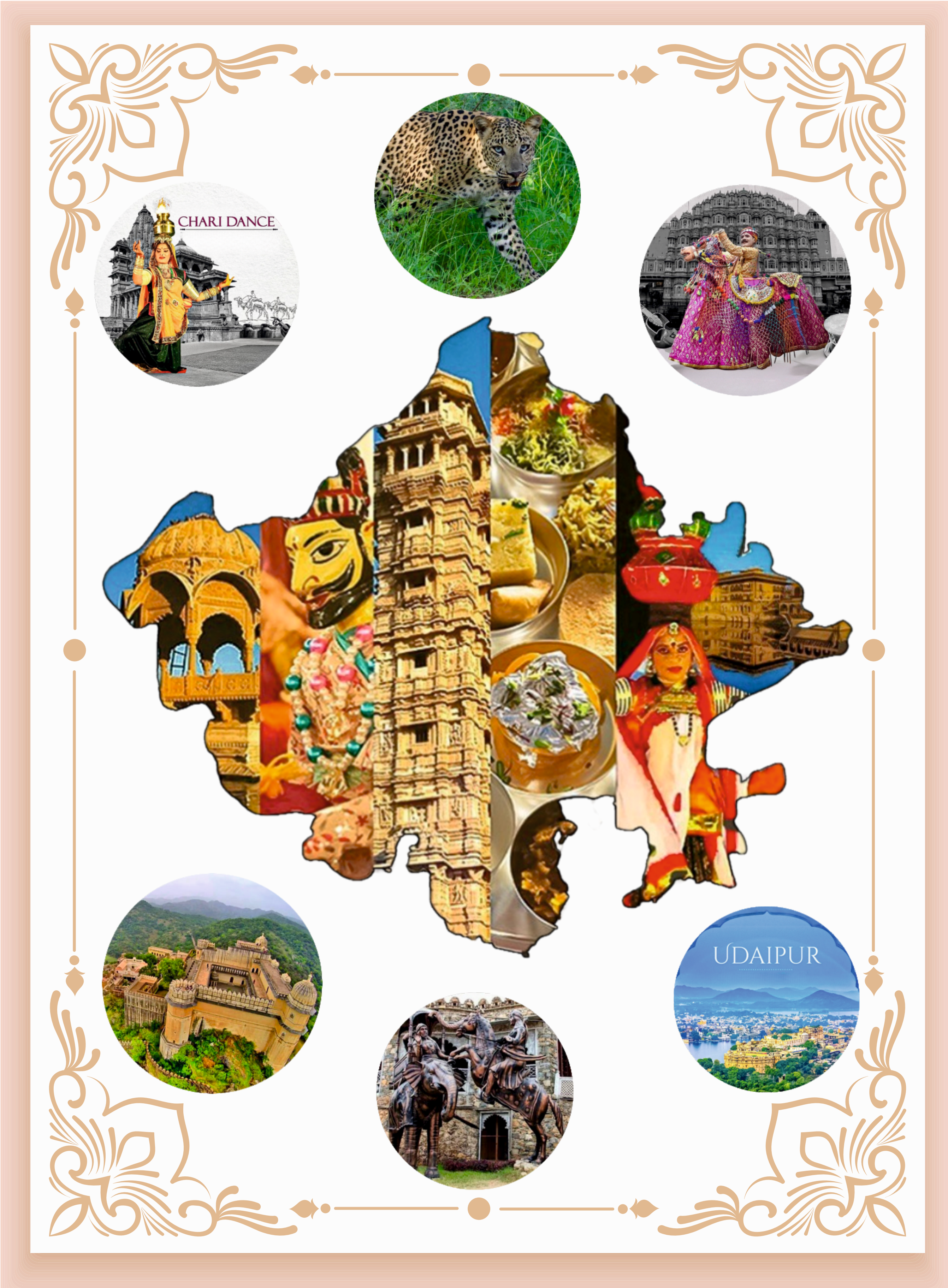
CHARI DANCE
UDAIPUR